केरल रीडर हिन्दी

319

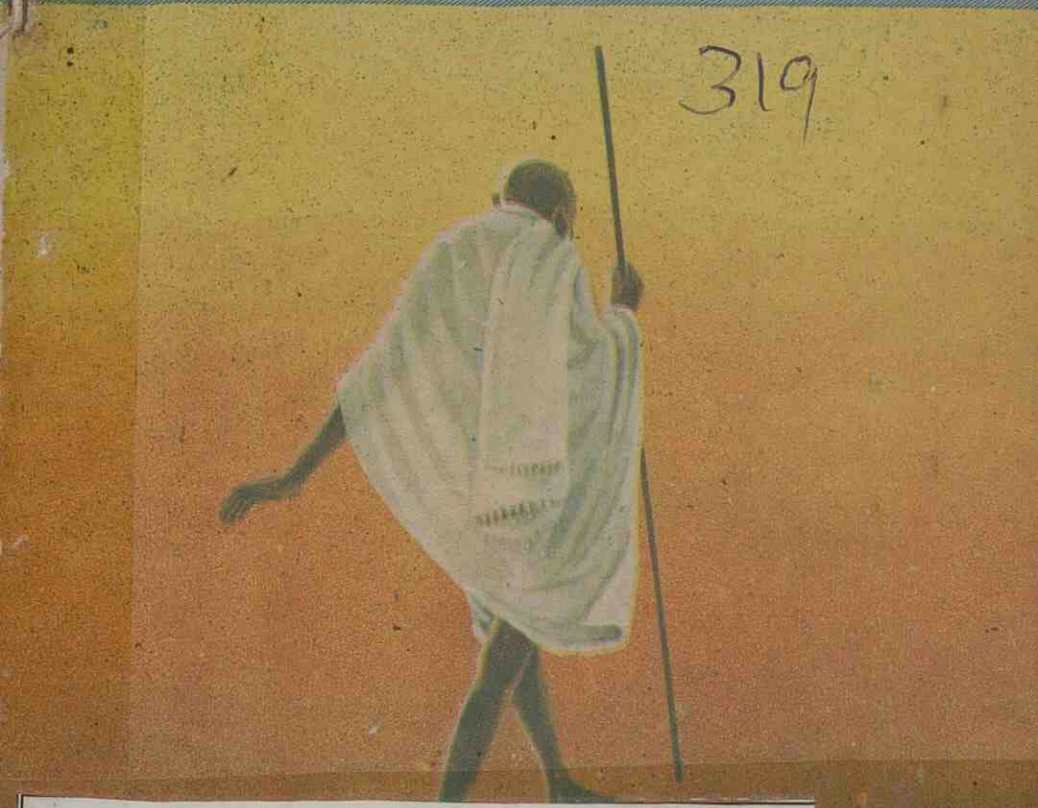

TB/X/1982/400(H)

10

TB/X/1982/400 CHD
319

केरल रीडर
हिन्दी

KERALA READER
HINDI

STANDARD X

POPULATION EDUCATION CELL
S.I.E.
TRIVANDRUM

GOVERNMENT OF KERALA
EDUCATION DEPARTMENT
1982

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है, सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मुझे अपने देश से प्रेम है और उसकी संपन्न और विविध परंपरा पर गर्व है।

उसके योग्य होने के लिए मेरा प्रयत्न जारी रहेगा। अपने माता-पिता, गुरु तथा अग्रज मेरे आदरणीय होंगे और उनसे मेरा व्यवहार सम्मानपूर्ण होगा।

मेरी प्रतिज्ञा है कि अपने देश और जनता के प्रति मेरी श्रद्धा अटल रहेगी। उनकी उन्नति और समृद्धि पर ही मेरा सुख निर्भर है।

© Government of Kerala 1982

अध्यापकों से

केरल हिन्दी रीडर माला की यह छठी और अंतिम पुस्तक एस. एस. एल. सी. क्लास केलिए नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। इसका ढांचा वही है जो चौथी तथा पाँचवीं पुस्तकों का है। इसकी शैक्षिक योजना तैयार करते समय नीचे दी हुई बातों पर ध्यान दें :—

(1) पिछली कक्षाओं में सिखाये गये व्याकरणिक तत्वों की आवृत्ति इस कक्षा में आवश्यक है। इस पुस्तक में आये नये उदाहरणों के सन्दर्भ में पूर्वपठित व्याकरणिक तत्वों का प्रत्यास्मरण और आवर्तन कराएँ।

(2) अर्थ-ग्रहण, पद-रचना, वाक्य-रचना, अन्वयतत्व का पालन और अनुच्छेद रचना, इन कार्यों पर विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित हो। बने-बनाये नोट लिखवाने के बदले ऐसे कार्यों की ओर विद्यार्थियों की रुचि को आकृष्ट करें।

(3) इस दर्जे में भी मौखिक अभ्यास अनिवार्य है। काफ़ी मात्रा में लिखित अभ्यास भी ज़रूरी है। क्यों कि परीक्षा तो लिखित ही है।

(4) परीक्षा में आनेवाले सभी प्रकार के प्रश्नों को शिक्षण के दैनिक कार्यों के बीच में रखकर अभ्यास दें।

शिक्षाविभाग,
केरल सरकार।

विषयसूची

क्रमसंख्या	पाठ	कालांश	पृष्ठसंख्या
1	पुष्प की अभिलाषा (पद्य)	2	1
2	वार्तालाप पाठ 1, 2, 3, 4	6	4
3	पत्रों के नमूने	2	15
4	गांधीवाद के प्रतीक—डॉ. ज़ाकिर हुसैन	4	18
5	मिनिकाय वासी	5	24
6	ग्राम (पद्य)	2	33
7	यह भी दुनिया है	5	36
8	चित्तरंजन का कारखाना	6	44
9	आगे बढ़ता पंजाब	6	54
10	भिक्षुक (पद्य)	2	64
11	अर्जुनसिंह की कथा	5	67
12	राजा रविवर्मा	6	76
13	शिवाजी का सच्चा स्वरूप	6	85
14	यशोधरा (पद्य)	3	97
15	अंतिम आहुति	5	101
16	तुलसीदास	7	110
17	समर्पण (पद्य)	3	119

पाठ 1

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को लालचाऊँ।

चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के शिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना, वनमाली !
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

कवि–माखनलाल चतुर्वेदी
'एक भारतीय आत्मा'

दीपिका

श्री माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' की इस कविता में एक फूल की विनम्र आशा का वर्णन है। फूल के रूप में कवि-हृदय ही बोल रहा है। माखनलाल जी एक कवि ही नहीं, बल्कि भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानी भी थे। लेकिन उनमें राजनैतिक महत्वाकांक्षा नहीं थी। उन्होंने जो कुछ किया और लिखा, वह राष्ट्रसेवा की विनम्र भावना से प्रेरित होकर ही है।

चाह	=	आशा, अभिलाषा, महत्वाकांक्षा
सुरबाला	=	देवकन्या, स्वर्ग की कुमारी, सुरसुन्दरी
गहनों में	=	आभूषणों के बीच में
गूँथना	=	पिरोना
बिंधना	=	फँसना, to get entwined
प्रेमी माला	=	प्रेमी की माला
प्यारी	=	प्रियतमा
ललचाना	=	लालायित करना, लालच देना
सम्राट	=	चक्रवर्ती
हरि	=	ईश्वर
शव (पु)	=	लाश (स्त्री)
शीश	=	सिर
इठलाना		गर्व करना
वनमाली	=	(1) उपवन का माली, बगीचे का माली (2) कृष्ण जो गले में वनमाला पहनते थे।

वनमाला	=	तुलसीदलों की लंबी माला
पथ	=	मार्ग
फेंकना	=	to throw away
शीश चढ़ाना	=	अपना सिर बलि के रूप में समर्पण करना, प्राणों को कुरबान करना, जीवन की बलि देना।

प्रश्न

अर्थ स्पष्ट करो :—

(1) सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।

(2) प्रेमी-माला में विंध प्यारी को ललचाऊँ।

(3) सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।

(4) देवों के शिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।

(5) मुझे तोड़ लेना वनमाली।

(6) मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

———

पाठ 2

वार्तालाप (1)

अशोक : रमेश, तुम पूना से कब लौटे ?

रमेश : आज ही सुबह आया हूँ।

अशोक : पूरी छुट्टियाँ पूना में ही रहे या कहीं और भी गए थे ?

रमेश : नहीं, इस बार मैं खूब घूमा। बंगलौर, मैसूर, मद्रास गया। दो हफ़्ते केलिए गोआ भी गया।

अशोक : तुम वहाँ रॉबर्ट से मिले ?

रमेश : हाँ, उससे भी मिला था। उसके साथ मैं काफ़ी घूमा।

अशोक : तुम गोआ में और कहीं भी गए ?

रमेश : नहीं, मैं पंजिम में ही ज़्यादा रहा।

अशोक : वहाँ तुम ठहरे कहाँ ?

रमेश : पंजिम में मेरे मामा जी रहते हैं न, उनके साथ ही रहा।

अशोक : वहाँ से कुछ लाए भी हो ?

रमेश : अरे, कुछ नहीं लाया। .....माता जी कहाँ हैं ?

अशोक : वे कहीं गयी हैं।

रमेश : और लोग कहाँ हैं ?

अशोक : सभी बाहर गये हैं।

रमेश : अच्छा, मैं चलता हूँ, तुम आराम करो।

प्रश्न

मातृभाषा में अनुवाद करो :—

इस बार, पूरी छुट्टियाँ, कहीं और, और लोग, आराम करो मैं काफ़ी घूमा।

जवाब दो :—

(1) रमेश किसकी माता के बारे में पूछता है ?
(2) रमेश कहाँ कहाँ गया ?
(3) किसके मामा पंजिम में हैं ?
(4) रॉबर्ट कहाँ रहता है ?

व्याकरण-अभ्यास

पूरा करो :—

(1) कल छुट्टी———।
(2) एक महीने में ———दिन हैं ?
(3) एक वर्ष में ———महीने हैं ?
(4) यह गाड़ी ———जाती है ?
(5) बच्चे सो ———।
(6) आज मैं ने रोटी———।
(7) बैठो, भाई, चाय———।
(8) आज रविवार है। परसों———था।

———

वार्तालाप (2)

अब्राहम : इनसे मिलिए। ये श्री सुन्दरम आप के परिचित हैं। बिजली के दफ़्तर में काम करते हैं। और ये कुमारी सुधा हैं। माडर्न कालेज में पढ़ाती हैं।

सुन्दरम : नमस्ते, आप कौनसा विषय पढ़ाती हैं ?

सुधा : मैं इतिहास पढ़ाती हूँ।

अब्राहम : सुन्दरम, क्या तुम अब भी उसी मकान में रहते हो ?

सुन्दरम : नहीं, आजकल मैं दादर में हूँ। बंबई में मकानों की बहुत तकलीफ़ है।

सुधा : आप ठीक कहते हैं। मेरा मकान भी बहुत छोटा है। मैं उसे छोड़ना चाहती हूँ। लेकिन कोई अच्छा मकान नहीं मिलता।

सुन्दरम : सुनिए, मेरे मकान के पास ही एक मकान खाली है, उसे देख लीजिए।

सुधा : लेकिन किराया कितना है ? मैं इस समय तीन सौ रुपये देती हूँ।

सुन्दरम : मेरे ख्याल में उसका किराया भी इतना ही है। लेकिन मकानमालिक तीन हज़ार रुपए पगड़ी माँगता है।

सुधा : तो फिर छोड़िए।

दीपिका

तकलीफ़ = hardship
पगड़ी = मकान मिलने के लिए मालिक को दिया जानेवाला नज़राना

माँगना (क्रिया) = to demand
माँग (स्त्री, संज्ञा) = demand
ख्याल = विचार

प्रश्न

जवाब दो :--

(1) सुधा क्या काम करती है ?
(2) वह क्यों अपना मकान छोड़ना चाहती है?
(3) "तो फिर छोड़िए" यहाँ सुधा क्या छोड़ने को कहती है।
(4) कौन दादर में रहता है ?

मातृभाषा में अनुवाद करो :--

इतिहास, बिजली का दफ़्तर, बिजली के दफ़्तर में, किराया, मकान का किराया।

व्याकरण-अभ्यास

पूरा करो :--

(1) अब नौ बजे--।
(2) हमारे मास्टर जी ऑफिस--हैं।
(3) मेरी माताजी डाक्टर--।
(4) रमेश--गणेश लड़के हैं।
(5) मेज़ पर किताब है। मेज़ पर कलम--है।
(6) राजू कागज़--लिखता है।
(7) राजू कलम--लिखता है।
(8) लीला--लड़की है।

(9) रमा और लीला––हैं।

(10) रमा और रहीमा मैदान में––हैं।

(11) महात्माजी भारत––राष्ट्रपिता हैं।

(12) केरल––भाषा मलयालम है।

वार्तालाप (3)

मैनेजर : रामू, स्टेनो से कहो कि वह मुझसे मिल ले।

रामू : अच्छा, साहब।

स्टेनो : जी, आपने बुलाया ?

मैनेजर : हाँ, देखो, जूली, मैं 3 बजे की गाड़ी से आगरा जा रहा हूँ। हो सकता है, सोमवार को लौटूं। अगर शाम को श्रीमती सूद आएँ तो उनसे कहना कि वे काम शुरू कर दें। मेरा इंतजार न करें। ये कुछ चिट्ठियाँ हैं। बड़े बाबू से कह दो कि वे इनके जवाब खुद दें। जवाब कल तक ज़रूर चले जाएँ।

स्टेनो : अगर वे कोई बात पूछना चाहें तो क्या कहूँ ?

मैनेजर : अगर कोई ज़रूरी बात हो तो दो बजे से पहले टेलिफ़ोन पर बात कर लें। और देखो कल बड़े साहब लौटेंगे। शायद वे प्रेस-नोट माँगें। उन्हें यह दे देना।

स्टेनो : अगर वे आपके लौटने की तारीख पूछें तो क्या कहूँ?

मैनेजर : भगवान बचाए तुमसे। अभी तो मैं ने बताया कि मैं शायद सोमवार को लौटूं।

दीपिका

स्टेनो = steno

इंतज़ार (पु) = प्रतीक्षा (स्त्री)

प्रश्न

जवाब दोः—

(1) मैनेजर आज कहाँ जा रहा है ?

(2) स्टेनो का नाम क्या है ?

(3) श्रीमती सूद से क्या कहना है ?

(4) श्रीमती सूद से यह कौन कहे ?

(5) "टेलिफ़ोन पर बात कर लें।" कौन किससे बात कर ले ?

(6) "भगवान बचाए तुमसे" मैनेजर क्यों ऐसा कहता है ?

(7) रामू कौन है ?

व्याकरण-अभ्यास

त्रुटियों को सुधारोः—

(1) वह का घर में

(2) मेरा यह मकान में

(3) तुम्हारा खत से

(4) तुम्हारा वह पहला व्याख्यान से

(5) आप का यह जवाब से

(6) ये महान लेखकों को

(7) यह महान लेखक को

(8) हमारा स्कूल का सभी विद्यार्थी को

(9) मेरा घर का वह नौकर ने

(10) आप का बताया वह सीधा मार्ग से

(11) यह कमरे में

(12) इस कविता

(13) महाकवि का इस कविता

वार्तालाप (4)

आज बस में एक बहुत दिलचस्प बात हुई। बस कंडक्टर ने एक आदमी से पूछा:—

"आपको कहाँ जाना है ?"

"अपने घर।"

"आपको इस बस में कहाँ जाना है ?"

"मुझे मालरोड तक जाना है"

यह कहकर उस आदमी ने अपनी सिगरेट जलाई। कंडक्टर को गुस्सा आ गया। वह बोला :

"आप अजीब आदमी हैं, क्या आपको टिकट नहीं लेना है ?"

"आपने मुझसे टिकट लेने के लिए कहा कब ?"

कंडक्टर को उसका जवाब अच्छा नहीं लगा। वह गुस्से में बोला :

"आप सिगरेट क्यों पी रहे हैं ?"

"सिगरेट मुझे पसंद है।"

"क्या आपको पढ़ना आता है ?"

"जी हाँ, आता है।"

"तो पढ़िए, सामने क्या लिखा है ?"

"लिखा है, सिगरेट पीना मना है।"

"तो आप सिगरेट क्यों पी रहे है ?"

"सामने दूसरा बोर्ड पढ़िए। उसमे लिखा है, हमेशा गणेश बीड़ी पीजिए। क्या मुझे बीड़ी पीनी चाहिए ? उधर देखिए, लिखा है, हमेशा ललित मिल्स की साड़ियाँ पहनिए। तो क्या मुझे साड़ी भी पहननी पड़ेगी ?"

दीपिका

दिलचस्प (वि)	=	रसीली, Interesting
बस	=	Bus
आपको पढ़ना आता है ?	=	आप पढ़ सकते हैं ?

निषेधार्थक 'मना है'।

सिगरेट पीना अन्दर आना यहाँ थूकना लॉन पर बैठना	मना है।

आवश्यकता बोधक 'चाहिए'

हमको मुझको आपको	चाय पीनी पानी पीना रोटी खानी आम खाना चिट्ठी पढ़नी खत पढ़ना	चाहिए।

परवशता बोधक 'पड़'

किसको क्या करना पड़ता है ?

लोगों को गंदा पानी पीना पड़ता है।

हमको रोटी खानी पड़ती है।

अध्यापक को कापियाँ घर ले जानी पड़ती हैं।

लड़कों को कुछ खाये बिना सोना पड़ता है ।

उनको फटे कपड़े पहनने पड़ते हैं।

प्रश्न

(1) 'आप ने कहा कब'? इस का अभिप्राय क्या है ?

(2) कंडक्टर को क्यों गुस्सा आया ?

(3) क्या, आप को पढ़ना आता है ? इस का जवाब संपूर्ण वाक्य में लिखो।

(4) क्या बीड़ी पीना मना नहीं है ?

(5) बोर्ड पर क्या पहनने का आदेश है ?

(6) 'क्या, मुझे साड़ी भी पहननी पड़ेगी? यह कौन पूछता है ? इसका जवाब क्या है ?

व्याकरण-अभ्यास

(1) निम्नलिखित शब्दों की साधुता पर विचार करो :-

कवियाँ भाईयाँ बैलें चिडियाएँ मेज़ें तालाबें कलमें भैंसाएँ हाथियाँ गुरूएँ पिताएँ।

(2) निम्नलिखित संज्ञाओं के बहुवचन लिखो :-

आँख	गाँव	दरवाज़ा	साथी	टोकरी
नाक	शहर	दीवार	सखी	कुरसी
मुख	सड़क	तस्वीर	दोस्त	मेज़
कान	रास्ता	चित्र	पत्ता	हाथी
हाथ	पेड़	माला	चाचा	नदी

(3) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन के साथ 'को' लगाने पर कौन-से पद मिलते हैं ?

रात, भाई, नाला, लड़की, बुढ़ियाँ, चालाक, सखी।

(4) निम्नलिखित शब्दों के प्रत्ययरहित और प्रत्ययसहित बहुवचन लिखो :—

पौधा, गधा, बहन, शरीर, साधु, पुस्तक, कहानी।

(5) कैसे शब्दों के अंत में 'याँ' तथा 'यों' दोनों रूप संभव हैं? पाँच उदाहरण देकर समझाओ।

(6) शुद्ध करो :—

भाईयों, कहानीयाँ, भैंसाओं को, देवियों को, परीक्षे में, बुढ़िये ने।

———

पाठ 3

पत्रों के नमूने

(1)

कोल्लम,
23-9-75.

सेवा में,

प्रधान अध्यापक,
सरकारी हाईस्कूल,
कोल्लम.

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरी बहन का विवाह अगले 26 सितंबर 1975 को होना निश्चित हुआ है। ता. 25 को अतिथियों के शुभागमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सादर प्रार्थना है 25 से 27 तारीख तक तीन दिन की छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें।

आपका विनीत छात्र,
अनिलकुमार.
स्टें. 9 (ए)

प्रश्न:—यह पत्र पढ़कर प्रधान अध्यापक क्या आदेश देंगे ? एक वाक्य में लिखो।

(2)

न्यू मेडिकल स्टोर,
नीलेश्वरम,
23-9-'75

सेवा में,

व्यवस्थापक,
आयुर्वेद फ़ार्मसी,
कोयम्बत्तूर–12

प्रिय महोदय,

'मातृभूमि' पर आप की औषधियों का विज्ञापन देखा। हम आपकी फ़ार्मसी के एजेन्ट बनना चाहते हैं। हमारी दूकान बहुत पुरानी और नामी है। हमें विश्वास है कि हम आप की औषधियों का अधिकाधिक प्रचार करने में समर्थ होंगे।

कृपया लौटती डाक से एजेन्सी की नियमावली भेज देने का कष्ट करें।

भवदीय,
राजगोपाल,
व्यवस्थापक.

रचना:—इस पत्र का उचित जवाब तैयार करो।

व्याकरण-अभ्यास

I. पूरा करो :—

(1) दूध से दही—है।

(2) मक्खन—कर घी बनाते हैं।

(3) ओणम के दिन केरल के लोग खुशियाँ—हैं।

(4) ओणम से दस दिन—अत्तम आता है।

(5) मद्रास यहाँ से—दूर है ?

II. कोष्ठक से चुनकर पूरा करो :—(ने, को, से, का, के, की, में, पर)

(1) भारत के जवान शत्रु—नहीं डरते।

(2) केरल—सब से लंबी नदी भारतप्पुषा है।

(3) नदी—किनारे सुन्दर खेत होते हैं।

(4) सूरज पूरब—आता है, पश्चिम—ओर जाता है।

(5) केरल की समृद्धि नदियों—कारण है।

III. कोष्ठक से चुनकर खाली स्थान भरो :—(ने, को, से, का, के, की, में, पर) किसी स्थान पर कुछ नहीं चाहिए तो '0' लिखो।

गांधीजी—जन्म गुजरात—हुआ। पढ़ाई—लिए वे इंगलैंड—गये। इंगलैंड जाने—पहले ही उन—ब्याह हो गया था। इंगलैंड—लौटकर वे वकील हो गये। कुछ वर्ष—बाद वे पत्नी—साथ लेकर दक्षिण आफ्रिका—गये। वहाँ रहते समय गांधीजी—भारतीयों—लिए बहुत कष्ट सहे। उन—नाम संसार भर—प्रसिद्ध हो गया।

पाठ 4

गांधीवाद के प्रतीक- डा० ज़ाकिर हुसैन

(लेखिका : श्रीमती ललिता लाल बहादुर शास्त्री)

इंसान चला जाता है, मगर उसकी याद बनी रह जाती है। कुछ ऐसे महान लोग होते हैं; जिनके न रहने के बाद भी लोग उनके नाम को श्रद्धा से याद करते हैं और उनके गुणों को तथा विचारों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर अपने जीवन का रास्ता बनाते हैं। संसार का यह नियम आज से नहीं, पता नहीं कब से, यों ही चला आ रहा है। डा० ज़ाकिर हुसैन का नाम इसी श्रेणी के लोगों में आता है। वह आज हम लोगों के बीच नहीं है, लेकिन उनके विचार और आदर्श हमारे सामने हैं, जो निरन्तर उनकी याद को ताज़ा बनाये रखते हैं।

मेरी मुलाकात ज़ाकिर साहब से सब से पहले उस समय हुई, जब मैं शास्त्रीजी के साथ पटना गई थी। उन दिनों वह बिहार के गवर्नर थे। जिस समय मैं ने उन्हें देखा, वह मुझे एक सरल, सहज और विनम्र इन्सान लगे। ऐसा महसूस हुआ कि यह इन्सान सांसारिक रस्मों और रिवाज़ों से ऊपर हैं और मैं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुई। उसके बाद वह जब मेरे सामने आये, तब मेरे सुख का संसार उजड़ चुका था। उस समय उन्होंने सहानुभूति के शब्दों में मुझ से कहा, "आप मुझे अपना भाई समझें और जो भी

खिदमत मेरे लायक हो, बतायें। मैं हमेशा आपका हुकम बजा लाऊँगा"।

उस समय ऐसा लगा जैसे सचमुच मेरे बड़े भाई मेरे सामने हैं। उस वक्त वह उप-राष्ट्रपति थे, बाद मे राष्ट्र के राष्ट्रपति बने, लेकिन उनका व्यवहार और संबन्ध शास्त्रीजी के परिवार के साथ सदा सहानुभूतिपूर्ण रहा।

ज़ाकिर साहब मूलतः धार्मिक इन्सान थे; लेकिन उनका विश्वास उस धर्म से संबन्धित था, जिसे हम इन्सानियत के नाम से कह सकते हैं। वह अपने धर्म में विश्वास रखते थे, लेकिन उनकी दृष्टि व्यापक थी। अतः सब धर्म उनके लिए एक-समान थे। वह कोई भेद-भाव नहीं रखते थे। उनके लिए धर्म का अर्थ था, वे उच्च आदर्श, जो इनसान की आत्मा को बुलन्द बनाते हैं। उनकी आन्तरिक इच्छा रही कि देश एक ऐसा खुशनुमा बाग हो, जिसमें हर धर्म के फूल खिलें और उसकी मिली-जुली महक सारे देश को एकता और प्रेम में भिगो दे। वह "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। उनका सब से बड़ा गुण उनकी विनम्रता थी। राष्ट्र के इतने बड़े पद पर आसीन होकर भी उन्हें कभी अभिमान नहीं हुआ। जो भी उनसे मिलता था, कभी भी उसे यह आभास नहीं होने देते थे कि वह उनसे छोटा है। यह विनम्रता उनके रग-रग में व्याप्त थी। वह सही माने में गांधीवाद के प्रतीक थे।

वह अपने पीछे महान गुणों को छोड़ गये हैं। उन्हें ही अपना कर हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

दीपिका

इंसान = इनसान, मनुष्य, आदमी

चला जाता है = मर जाता है (इस संदर्भ में)

मगर = लेकिन, किन्तु, परन्तु

याद (स्त्री.) = स्मरण (पु.) स्मृति (स्त्री.)

श्रद्धा (स्त्री.) = बड़ा आदर

ताज़ा = Fresh, വാടാത്ത, പുതുമയുള്ള

मुलाकात (स्त्री.) = भेंट (स्त्री.)

वह (उच्चारण वो) बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है।

सरल, सहज = आडंबरहीन, Simple

विनम्र = विनीत, Humble

महसूस (स्त्री.) = अनुभूत (वि)

रस्म और रिवाज़ = Customs, പതിവുകൾ, ആചാര മുറകൾ

सुख का संसार उजड़ चुका था = श्री लाल बहादुर शास्त्री का दुखद देहांत हो चुका था।

खिदमत = सेवा

जो भी खिदमत मेरे लायक हो = जो सेवा मुझ से हो सके

हुकम = आज्ञा, Order

हुकम बजा लाना = आज्ञा का पालन करना

ऐसा लगा = ऐसा अनुभव हुआ

सचमुच = वास्तव में

वक्त = समय

व्यवहार = Behaviour, പെരുമാറ്റം
संबन्ध = Relation, ബന്ധം
परिवार = कुटुंब
मूलतः = मूल रूप से, Basically
इन्सानियत = मनुष्यत्व, आदमियत
धर्म = Religion, മതം
व्यापक = विशाल
बुलन्द = उच्च
खुशनुमा = प्रियदर्शन, देखने में सुन्दर
बाग = बगीचा
मिली-जुली = सम्मिलित
महक (स्त्री) = सुगन्ध (स्त्री)
भिगो देना = भीगा करना, to make wet
प्रेम में भिगो देना = प्रेममग्न करना

"वसुधैव कुटुंबकम्"—संस्कृत की एक उक्ति है। वसुधा एव कुटुंबकम् = भूमी ही कुटुंब है। पूरे संसार को अपने परिवार के समान समझना। ലോകമേ തറവാട്

आसीन होना = बैठ जाना
अभिमान = गर्व
आभास = छोटी सी झलक
रग रग में = सारे शरीर में
सही माने में = ठीक अर्थ में
गांधीवाद = गांधी के सिद्धांत
श्रद्धांजलि = श्रद्धा से अर्पित अंजलि
अपना करना = अपनाना, स्वीकार करना

प्रश्न

I. **जवाब लिखो:—**

(1) श्रीमती ललिता शास्त्री की मुलाकात डा० हुसैन से कब हुई ?

(2) उस समय डा० हुसैन के व्यक्तित्व का कैसा प्रभाव लेखिका पर पड़ा ?

(3) "उस समय ऐसा लगा जैसे....." किस समय? कैसा लगा? क्यों?

(4) डा० हुसैन के धार्मिक सिद्धांत कैसे थे ?

(5) डा० हुसैन के कौन-कौन गुण हैं जिनका प्रभाव लेखिका पर पड़ा है ?

II. **सप्रसंग व्याख्या करो:—**

(1) हमेशा आपका हुकम बजा लाऊँगा।

(2) देश एक खुशनुमा बाग हो।

(3) उस समय मेरे सुख का संसार उजड़ गया था।

व्याकरण-अभ्यास

'है' अथवा 'था' रूपों से पूरा करो :-

(1) आज पढ़ाई—। कल पढ़ाई नहीं —।

(2) कल मैं अच्छा—। आज बीमार—।

(3) राम, क्या कल तुम हाज़िर— ? हाँ, कल मैं हाज़िर—।

(4) आज सोमवार—। कल इतवार—।

(5) कल कौन सी तारीख ---?

(6) तुम अर्जुन के समान वीर---।

(7) सीता, क्या तुम आज बीमार ---? नहीं, मैं बीमार नहीं---।

(8) पिछले साल मैं (लीला) मद्रास में---। अब में लंदन में---।

(9) इस दर्जे में अब कितने विद्यार्थी---? कितनी विद्यार्थिनियाँ---?

(10) पिछले वर्ष यहाँ कितने लड़के---? कितनी लड़कियाँ---?

(11) तुम्हारी उम्र कितने वर्ष की--- ?

(12) मैं सोलह वर्ष का लड़का ---।

(13) अब मेरी उम्र सोलह वर्ष की---।

(14) सीता अब पन्द्रह वर्ष की लड़की ---।

(15) भारत में अंग्रेज़ों का राज---। अब भारत आज़ाद---।

पाठ 5

मिनीकायवासी

मिनिकाय द्वीप भारत का ही एक अंग है। वह भारत के दक्षिणी तट, मलाबार से लगभग 220 किलोमीटर दूर पश्चिम की ओर अरब सागर में स्थित है। यह द्वीप मूँगों द्वारा बनाया हुआ प्रवाल–द्वीप है। इसका क्षेत्रफल लगभग आठ वर्ग-किलोमीटर है। लम्बाई लगभग नौ किलोमीटर और चौड़ाई कहीं भी एक किलो-मीटर से अधिक नहीं है।

यह बहुत ही रमणीक द्वीप है। नारियल के बाग चारों ओर फैले हुए हैं। यहाँ का यही सब से बहुमूल्य धन है। यहाँ की एक-मात्र उपज नारियल ही है। लोग इसी पर अपना निर्वाह करते हैं।

इस द्वीप की कुल आबादी लगभग 8 हज़ार है, जिसमें से 1/8 से भी अधिक लोग मलाबार तट के बन्दरगाहों में जहाज़ों पर माल लादने तथा चढ़ाने का काम करते हैं।

शिक्षा

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि द्वीप में केवल एक ही बस्ती है जो कि द्वीप के मध्य में स्थित है। इसे लगभग 8 हज़ार की जनसंख्यावाला एक गाँव कह सकते हैं।

इस द्वीप में प्रायः स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक सुशिक्षित है। पुरुषों को अधिक पढ़ने-लिखने की इच्छा नहीं है। स्त्रियाँ

पढ़ने-लिखने में बहुत आगे हैं। अब तो यहाँ भारत सरकार की ओर से पाठशाला भी खोल दी गई है।

रीति-रिवाज़

इन लोगों की विवाह रीतियाँ भी बड़ी अनोखी हैं। यहाँ छोटी आयु में ही विवाह करने का प्रचलन है। स्त्री को ही अपने लिए योग्य पति चुनने का अधिकार है। यहाँ विवाह के बाद लड़की लड़के को अपने घर ले आती है और पति को अपने घर में ही रखती है। लड़कों को शादी के बाद माँ-बाप का घर छोड़ना पड़ता है। ससुराल का घर तभी छूटता है जब कि उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जाए।

लड़कियाँ ही पिता की संपत्ति की उत्तराधिकारिणी समझी जाती है। लड़कों का इसमें कोई अधिकार नहीं समझा जाता है। वह केवल अपनी पत्नी की संपत्ति पर अपना अस्थाई अधिकार जता सकता है। यहाँ 'मरुमक्कत्तायम' अर्थात् मातृकुलीय उत्तराधिकार कानून माना जाता है।

नागरिक जीवन

आपसी झगड़ों को ये लोग चौपालों में ही दूर कर लेते हैं। यही कारण है कि यहाँ किसी भी पुलिस चौकी या न्यायालय के दर्शन नहीं होते हैं। सारे द्वीप में कहीं भी पुलिस चौकी नहीं मिलेगी। गाँव के बीचोंबीच एक पंचायत घर है, जहाँ सब झगड़े निपटाये जाते हैं।

सरकार ने अब यहाँ एक अस्पताल, एक स्कूल तथा एक वायरलेस-स्टेशन भी खोल दिये हैं। इसके अतिरिक्त एक पुलिस चौकी भी भारत की सुरक्षा के उद्देश्य से यहाँ बना दी गयी है। इस पुलिस चौकी को यहाँ की जनता के किसी भी मामले में हाथ डालने का अधिकार नहीं है। इसका कार्य केवल भारत की सुरक्षा तक ही सीमित है। यह चौकी सुरक्षा-विभाग की ओर से है।

यहाँ अभी भी वस्तु विनिमय का आदिकालीन ढंग प्रचलित है। पैसे के बदले में व्यापार करने की प्रथा इन लोगों में नहीं है।

धर्म

यहाँ की जनता इस्लाम धर्म को मानती है, परन्तु अन्य देशों की मुसलमान स्त्रियों की तरह यहाँ की स्त्रियाँ बिलकुल पर्दा नहीं करती हैं।

उद्योग

नारियल ही यहाँ की सबसे बड़ी फ़सल है, परन्तु इसके सहारे इनका जीवन-यापन नहीं हो पाता है। इसलिए लगभग सभी पुरुष मछली पकड़ने का काम करते हैं।

आजकल मछली-उद्योग काफ़ी उन्नत अवस्था में है। कभी-कभी एक नाव के मछेरे लगभग 500 रु की मछलियाँ एक दिन में पकड़ लेते हैं। यहाँ की मुख्य मछली 'ट्यूणा' है। यहाँ से मछलियाँ श्रीलंका , बर्मा, मलेशिया, तथा अपने देश भारत के अन्य भागों में भेजी जाती हैं। इसे बेचकर ये अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ प्राप्त करते हैं।

कुशल-नाविक

ये लोग नौकाएँ बनाने में बहुत कुशल हैं। सर्पाकार नौका इन की विशेषता है जिस पर यहाँ के लोगों की उच्च कला की छाप दिखाई पड़ती है। ये नावें बहुत ही हल्की होती हैं। भारत या श्रीलंका की नावों से ये नौकाएँ किसी भी माने में कम नहीं हैं।

लेखिका–मीना दास

दीपिका

मूँगा (पु)	=	प्रवाल, பவிழம்
प्रवाल द्वीप	=	Coral islands
क्षेत्रफल	=	Area
लंबाई (सं)		लंबा (वि.)
चौड़ाई (सं)		चौड़ा (वि.)

वर्ग किलोमीटर = Square km. ചതുരശ്ര കി. മീ.
रमणीक = सुन्दर
बाग = Plantation
बहुमूल्य = अधिक मूल्य का
उपज = उत्पन्न वस्तु
निर्वाह करता है = जीवन बिताता है
आबादी = जनसंख्या
1/8 = अष्टमांश
बन्दरगाह = Port
माल = Goods, ചരക്ക്
लादना = to load
बस्ती = जहाँ लोग रहते हैं। गाँव
सुशिक्षित स्त्रियाँ = अच्छी तरह पढ़ी लिखी स्त्रियां
अनोखा = विचित्र
आयु = उम्र
घर छूटता है = घर से संबंध टूट जाता है
उत्तराधिकारिणी (स्त्री.) = അനന്തരാവകാശി
अस्थाई = अस्थिर
जताना = बताना
मरुमक्कत्तायम = മരുമക്കത്തായം
कानून = नियम, Law
आपसी = परस्पर का
चौपाल = चौकी, पंचायत के बैठने की जगह
पुलिस चौकी = पुलिस स्टेशन

न्यायालय के दर्शन नहीं होते = न्यायालय कहीं दिखाई नहीं देता

बीचों बीच	=	मध्य स्थान में
निपटाना	=	फ़ैसला करना
मामला	=	कार्य
सुरक्षा	=	Defence
सीमित	=	Limited
सुरक्षा विभाग	=	Defence department
उद्योग	=	Industry
जीवन यापन	=	जीवन बिताना
मछली उद्योग	=	Fish Industry
मछेरे	=	मछली पकड़नेवाले
ट्यूणा	=	Tuna
सर्पाकार नौका	=	सर्प के आकार की नाव
छाप	=	मुद्रा
हलका	=	कम वजन का × भारी

वाक्य रचना

स्थित :

काश्मीर हिमालय की गोदी में स्थित है।

फ़ैला हुआ :

हिमालय पहाड़ पश्चिम से पूर्व तक लगभग 1500 मील फैला हुआ है।

निर्वाह करना :

पंजाब के लोग अधिकतर गेहूँ पर निर्वाह करते हैं।

हाथ डालना :

भारत के आभ्यन्तर मामलों में किसी विदेश को हाथ डालने का अधिकार नहीं है।

पर्दा करना :

मुस्लिम स्त्रियाँ उत्तर भारत में पर्दा करती हैं।

दिखाई पड़ना :

कथकलि में केरलीय कला और नृत्य की छाप दिखाई पड़ती है।

बना रहना :

हमारे हृदय में राष्ट्र-प्रेम की भावना हमेशा बनी रहे।

माल लादना :

बाज़ार में माल लादनेवाले विशेष मज़दूर हैं।

की ओर से :

गाँव में पंचायत की ओर से पीने के पानी का प्रबन्ध होता है।

जीवन लीला समाप्त हो जाय–मर जाय

मातृभूमि से हमारा संबन्ध तभी छूटता है जब कि हमारी जीवन लीला समाप्त हो जाए।

दूर कर लेना :

गांव के झगड़े प्राचीन काल से पंचायत के द्वारा दूर किये जाते थे।

दर्शन होना:

केरल में कहीं भी सांप्रदायिकता के दर्शन नहीं होते।

झगड़ा निपटाना:

आजकल सब झगड़े राष्ट्रीय नेताओं द्वारा निपटाये जाते हैं।

प्रश्न

I. जवाब लिखो:--

(1) मिनीकाय द्वीप कहाँ है ?

(2) उसका क्षेत्रफल कितना है ?

(3) यह बहुत रमणीक द्वीप है। कारण क्या है ?

(4) मिनीकाय निवासी अपना निर्वाह कैसे करते हैं ?

(5) मिनीकाय की आबादी कितनी है ?

(6) मिनीकाय निवासियों के विवाह की रीति कैसी है ?

(7) वहाँ पिता की संपत्ति पर उत्तराधिकार किसका है ?

(8) वहाँ कहीं भी न्यायालय के दर्शन नहीं होते। क्यों ?

(9) मिनीकाय की पुलिस चौकी किस के लिए है ?

(10) द्वीप का प्रमुख उद्योग क्या है ?

(11) द्वीप से मछली कहाँ भेजी जाती है ?

(12) मिनीकायवालों की नौकाएँ कैसी होती हैं ?

II. निम्नलिखित विषयों पर पाँच–छह वाक्यों का एक-एक खंड लिखो :–

(1) मिनीकाय की स्त्रियाँ।

(2) मिनीकाय के उद्योग।

(3) मिनीकाय की प्रगति।

III. इस पाठ में आये हुए शब्दों का प्रयोग करके केरल के उद्योगों के बारे में दस-बारह वाक्यों का एक खंड लिखो।

VI. वाक्यों में प्रयोग करो :–

की अपेक्षा, पढ़ा-लिखा, निर्वाह करना, हाथ डालना, जीवन की लीला समाप्त करना।

व्याकरण–अभ्यास

I. कोष्ठक में दी हुई धातु के उचित रूप से वाक्य पूरा करो :–

(1) मछली पानी में–– ।(रह)
(2) घोड़े तेज़––। (दौड़)
(3) मेरी बेटी आजकल गाना––। (सीख)
(4) बहिन, क्या तुम देर से––? (उठ)
(5) मेरा भाई दिल्ली में काम––। (कर)
(6) आज शाम को रेडियो पर श्रीमती लीला––। (गा)
(7) हम रोज़ शाम पाँच बजे टेनिस––। (खेल)
(8) ये औरतें रोज़ बाज़ार––। (जा)
(9) हम लोग––(रो), आप लोग––। (हँस)
(10) यह लड़की––(नाच), वह स्त्री––। (गा)

II. क्रिया-काल में अन्तर लाये बिना शुद्ध करो :–

(1) सीता और मालती हिन्दी पढ़ते हैं।
(2) महाकवि यह कविता लिखती है।
(3) मेरा भाई यह काम कर सकती है।
(4) लोग मेहनत करती है, और गरीबी दूर करती है।
(5) आज खूब पानी बरसती है।

———

पाठ 6

ग्राम

प्रकृति-सुन्दरी की गोदी में,
खेल रहा तू शिशु-सा कौन ?
कोलाहलमय जग को हरदम,
चकित देखता है तू मौन।

जग के भोलेपन का प्रतिनिधि,
सहज सरलता का आख्यान।
विमल स्त्रोत मानव-जीवन का,
तू है विधि का करुण-विधान।

भव्य-भाव-भण्डार अलौकिक,
सत्य-शीलता का आगार।
पारावार प्रेम का तू है।
दुःख-दीनता का आधार।

छिपा मही के मृदु अंचल में
जग का मूर्तिमान अनुराग।
तुझसे ही सीखता जगत है,
औरों के हित करना, त्याग।

भोली ललनाओं से लालित,
विश्व-पुष्प का पुण्य पराग
कृषकों के स्रम-जल से सिंचित,
जग का छोटा-सा है बाग।

लघु होकर भी तू विशाल है,
है छू गया न तुझे गरूर।
जग-सर का पंकज है, पर तू,
मलिन पंक से रहता दूर।

कवि–ठाकुर गोपाल शरण सिंह

दीपिका

गोदी	=	गोद
हरदम	=	हमेशा
चकित	=	विस्मित, घबराया हुआ
भोलेपन	=	हृदय की सरलता, पापरहित स्वभाव
आख्यान	=	कथा, कहानी
विमल	=	निर्मल
स्रोत	=	प्रवाह
विधान	=	व्यवस्था, निर्माण
भव्य	=	शुभ
भण्डार	=	खजाना
आगार	=	स्थान
पारावार	=	समुद्र
ललना	=	स्त्री
लालित	=	लालन किया हुआ
सिंचित	=	सिंचा हुआ
स्रमजल	=	श्रमजल, വിയർപ്പ്, sweat
गरूर	=	गर्व

सर = सरोवर
पंकज = कमल
पंक = कीचड़

प्रश्न

I. नीचे लिखी विशिष्ट उक्तियों का सारांश सरल वाक्यों में बताओ :–

(1) जग के भोलेपन का प्रतिनिधि ।
(2) सहज सरलता का आख्यान ।
(3) लघु होकर भी तू विशाल है ।

II. जग-सर का पंकज है, पर तू
मलिन पंक से रहता दूर ।
इन पंक्तियों का भावार्थ बताओ ।

III. "कोलाहलमय जग" से कवि का तात्पर्य क्या है ?

IV. ग्राम की श्रेष्ठता किन किन बातों में हैं ? अपने वाक्यों में समझाओ ।

पाठ 7

यह भी दुनिया है

(लेखक: नारायण स्वरूप शर्मा)

(1)

नार्थ लन्दन का हमारा मकान। सुबह के सात बजे ठह... ठह...ठह...। दरवाज़ा खोला तो 8-9 साल के दो लडके, हाथ में बाल्टी और स्पंज। "गुड मार्निग। माफ़ कीजिए, हमारा हाथ घण्टी तक नहीं पहुँचा, इसलिए खटखटाना पड़ा। आपकी कार गन्दी लग रही है, इसकी धुलाई कर दें। 5 शिलिंग होंगे।"

"5 शिलिंग नहीं, 4 देंगे।"

दोनों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा; –"अच्छा ! ठीक है ! हमें बाथरूम में से पानी ले लेने दीजिए।" और देखते ही देखते बाल्टी में पानी लेकर दोनों कार धोने में जुट गये। मुझे कुछ उत्सुकता हुई, तो पास जाकर खड़ा हो गया।

"क्या तुम्हारे पिताजी को पता है कि तुम कहाँ हो ?"

"नहीं।"

"क्यों ? क्या उन्हें बताया नहीं ?"

"नहीं। वह रात को देर से आये, इसलिये पड़े सो रहे हैं।"

"तुम्हारी माताजी को पता है?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं ?"

"वह 7 से 9 तक रोज़ाना काम पर जाती है।"

"तो क्या घर पर पिताजी अकेले सो रहे हैं?"

"नहीं, मेरी छोटी बहन भी है। वह सात वर्ष की हो गई है। पर एकदम निकम्मी है। इतनी कामचोर है कि मैं ने अपने साथ चलने को कहा तो नहीं चली। एक शिलिंग मैं उसे देने को तैयार था। मज़बूर होकर मुझे अपने इस साथी को लाना पड़ा।

मैं ने पूछा :—"तुम इतनी मेहनत क्यों करते हों?"

"30 पौंड चाहिए। आधा पैसा माताजी-पिताजी ने कह दिया है। आधा मुझे कमाना है। बस, अगले हफ़्ते ही मेरी बाइसिकिल आ जाएगी।"

(2)

एडिनबरा की पहाड़ी पर एक मध्यमवर्गी होटल। हम लोग बाहर की लौंज में बैठे हुए थे, तो सामान से लदा हुआ 16–17 साल का एक लड़का आ रहा था। सामने के काउंटर पर उसने कहा—"सब से सस्ता कमरा चाहिए। अभी तो लंदन पहुँचना है। वहाँ से आस्ट्रेलिया जाना है।"

मुझे घुमक्कड़ पर आश्चर्य हुआ और मैं ने उस से कहा कि नहा-धोकर वह चाय पीने के लिए मेरे कमरे में आएँ, क्यों कि कुछ बात करेंगे। वह आया तो मैं ने पूछा—"आस्ट्रेलिया क्यों जा रहे हो?"

"कुछ कमाऊँगा और जीवन बनाऊँगा। एडिनबरा से 100 मील दूर के गाँव में रहता हूँ। कुछ अच्छी नौकरी नहीं मिलती।

अवसर देखकर मुश्किल से हफ़्ते में तीन पाऊँड कमाता हूँ। आस्ट्रेलिया में छूटते ही मुझे 12 पाउँड हफ़ता मिलेंगे।

मैं ने कहा—"तुम्हारे माता-पिताजी का क्या होगा ?"

'क्या होगा' का क्या मतलब है, बिना यह समझे उसने जवाब दिया–

"मेरा बाप आकउंटेंट है। मज़े से कमाता है और खाता है।"

"तो क्या वह तुम्हें ऊँची पढ़ाई के लिए यूनिवर्सिटी नहीं भेज सकता था ?"

"यूनिवर्सिटी में 5 साल डिग्री में जाएंगे। 5 साल में मैं 10 हज़ार पाउँड आस्ट्रेलिया से लेकर आ जाऊँगा। उतनी रकम में गाँव के पास एक छोटी फैक्टरी खोलने की कोशिश करूँगा।"

"माँ ने कूछ नहीं कहा ?"

"कहा क्यों नहीं ? वह चाहती थी कि मैं कोई छोटी-मोटी नौकरी ही करूँ। पर मेरी ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी है। जो मैं चाहूँगा वह करूँगा।"

(3)

लन्दन का वह मकान; रात के दस बजे. मकान की घंटी बजी। बाहर निकला तो 22-20 वर्ष का एक नवयुवक।

"मैं ग्रीक हूँ और साइप्रस से आ रहा हूँ। आज ही आया हूँ। होटल के लिए मेरे पास पैसे नहीं है। मैं ने सोचा आप हिन्दुस्तानी

हैं, इसलिए शायद मेरे ऊपर कुछ सहानुभूति करें। केवल रात-भर टिक कर सुबह कहीं चला जाऊँगा।"

मैं ने उसे अन्दर ले लिया और उसने अपनी कहानी सुना दी।

"साइप्रस में बुरी हालत है। मेरे माँ-बाँप बहुत गरीब हैं। फ़ैक्टरी के एक आफ़िस में क्लर्की करता था, पर उससे माँ-बाप और छोटे भाई-बहन का खर्चा नहीं चलता। माँ को एक महीने का खाने को देकर मैं लन्दन भाग आया हूँ। मैं ने तय कर लिया है कि जिस फ़ैक्टरी में मैं काम करता था, जब तक उसे खरीदने लायक पैसे नहीं हो जाएँगे, शादी नहीं करूँगा।"

"कितने पैसों में फ़ैक्टरी खरीदी जाएगी?"

"इतनी रकम कब तक बना लोगे?"

"यह सबं कुछ मुझे नहीं पता। जब तब भी बनें।"

"माता-पिता से पूछा था?"

"उन से पूछना ही क्या था। बड़ा बनूँगा तो खुश होंगे ही।"

5 साल बाद अपने एक मित्र को मकान खरीदवाने के चक्कर में हैमस्टेड के एक बहुत बड़े स्टेट एजेंट के आफ़िस में मैं गया। फ़ार्म भरने की औपचारिकता के बाद हमें मैनेजर के कमरे में ले जाया गया और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मेरा परिचित ग्रीक कुर्सी पर बैठा हुआ था। बड़ा खुश हुआ। कॉफी के बाद उसने बताया कि अब उसने साइप्रस लौटने का इरादा त्याग दिया है। उसके माँ-बाप और भाई-बहन वहाँ आ गये हैं। स्टेट एजेंसी के लन्दन में उसके 10 आफ़िस हैं और पाँच वर्ष में ही स्पोर्ट्स गुड्स की

उसने दो फ़ैक्टरियाँ खोल डाली थीं, जिनका काम उसका छोटा भाई देखता है।

दीपिका

स्पंज = Sponge
बाल्टी = Bucket
माफ़ कीजिए = Please excuse me, Sir
धुलाई (सं) = Washing, Cleaning
दोनों = दोनों लड़के
जुट जाना = कार्य में दृढ़ता से लग जाना
पता = ज्ञान, जानकारी
रोज़ाना = प्रतिदिन, Daily
काम पर = काम करने के लिए, काम की जगह पर
एकदम = बिलकुल
निकम्मा (वि) = कुछ काम न करने वाला
निकम्मा–निकम्मे–निकम्मी
काम-चोर = जो काम करने में चोर के समान है
मैं ने अपने साथ चलने को कहा––किसने कहा ? किससे कहा ? क्या कहा ?
शिलिंग = करीब 75 पैसे के समान, Shilling
पाऊँड = इंगलैंड की मुद्रा, Pound Sovereign
बाईसिकिल = Bicycle
अगला हफ़्ता
अगले हफ़्ते में

अगले हफ़्ते (में) ही = Next week itself

बस–(विस्मयादिबोधक संतृप्ति सूचक)

एडिनबरा = Edinburgh

पहाड़ी (स्त्री) = एक छोटा सा पहाड़ (पु)

मध्यमवर्गी = Middle class

लौंज = Lounge

काउँटर = Counter

घुमक्कड़ = बहुत घूमनेवाला

मुश्किल से = बड़ी कठिनाई से

टिकना = कुछ काल के लिए रहना, ठहरना

खर्चा नहीं चलता = खर्च के लिए पैसे काफ़ी नहीं होते

तय करना = निश्चय करना

नहीं पता = नहीं मालूम

खरीदवाना (प्रेरणार्थक) खरीदना, खरीदवाना

के चक्कर में = कार्य में भड़कते भड़कते

हैमस्टेड = Hamstead

स्टेट एजेंट = State Agent, Estate Agent

फ़ाम = Form

भरना = पूरा करना

छोटी मोटी नौकरी = साधारण नौकरी

कोई मुझे उस कमरे में ले गया।

ले गया (कर्तृवाच्य) ले जाया गया (कर्मवाच्य)

ठिकाना = अंत, सीमा, स्थान

आश्चर्य का ठिकाना न रहा = मुझे असीम आश्चर्य हुआ

इरादा = निश्चय
त्याग दिया है = छोड़ दिया है
माँ-बाप, भाई-बहन–पुल्लिग बहुवचन

प्रश्न

I. जवाब लिखो :–

(1) तुम इतनी मेहनत क्यों करते हो ? इस प्रश्न का उत्तर क्या था?

(2) 'मेरी ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी है।' यह किसने कहा ? उस समय उसकी हालत कैसी थी ?

(3) यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के बारे में उसकी राय क्या थी ?

(4) ग्रीक जवान किस हालत में लन्दन पहुँचा ?

(5) पाँच वर्ष बाद उसकी हालत क्या हो गई ?

(6) "जब तक.....शादी नहीं करूँगा।" यह किसकी शपथ थी ? क्या यह सफल हुई ?

II. रेखांकित शब्द के बदले कोष्ठक के शब्द का प्रयोग करो :–

(1) आप की कार गंदी लग रही है। (कमरा)

(2) पिताजी पड़े सो रहे हैं। (माताजी)

(3) मेरा बाप एकाउण्टेन्ट है ? मज़े से कमाता है, खाता है। (आदरसूचक–अब्बाजान)

(4) कितने पैसों में फ़ैक्टरी खरीदी जाएगी ? (कारखाना)

(5) उसका भाई फ़ैक्टरी का काम देखता है। (मामाजी)

(6) कहाँ से आ रहे हो तुम ? (आप)

(7) छोटी मोटी नौकरी। (काम)

III. आदेशानुसार लिखो:–

(1) मेरी छोटी बहन है। वह तो सात साल की हो गई है, पर एकदम निकम्मी है। इतनी कामचोर है कि मैं ने अपने साथ चलने को कहा तो नहीं चली।— ('बहन' की जगह, 'भाई' का प्रयोग करो)

(2) मैं मज़बूर हुआ। मैं चुप हो गया। ('हो कर' का प्रयोग करके वाक्यों को मिलाओ।)

(3) जो मैं चाहूँगा, वह करूँगा। (भूतकाल में बदलो)

(4) सामान से लदा हुआ एक सोलह-सत्रह साल का लड़का आ रहा था। ('लड़की' का प्रयोग करो।)

(5) मेरा एक परिचित कुर्सी पर बैठा हुआ था।
(आदरसूचक बहुवचन का प्रयोग करो)

पाठ 8

चित्तरंजन का कारखाना

चित्तरंजन,
1 मई, 1966

प्रिय विजय,

शुभाशीर्वाद।

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि तुम चित्तरंजन का कारखाना और उसकी छोटी-सी नगरी देखने के लिए बड़े उत्सुक हो। हो सका तो अगले ग्रीष्मावकाश में तुम्हें यहाँ लाकर इंजन-कारखाना और रेल-बस्ती दिखा दूँगा। तब तक तुम्हारी जानकारी के लिए यहाँ के विषय में संक्षेप में लिख रहा हूँ।

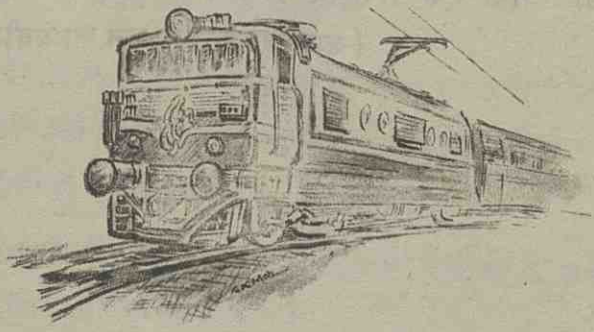

तुम जानते हो, सन् 1947 के पहले देश में कल-कारखानों की कमी थी। छोटे-छोटे कलपुर्जों से लेकर बड़ी-बड़ी मशीनें तक

विदेशों से ही मँगाई जाती थीं। रेलगाडियाँ कम थीं और यात्रा अधिक। इससे भीड़ अधिक होती थी। पुरानी चाल के इंजन होने के कारण यात्रा में समय भी अधिक लगता था। रेल का सारा सामान विदेश से आता था और इस कारण हमारे देश का बहुत-सा रुपया बाहर चला जाता था।

लोगों की ओर से लगातार माँग की जा रही थी कि हमारे देश की रेल-व्यवस्था के लिए आवश्यक सामान, विशेषकर इंजन भारत में ही बनाये जाएँ। पर विदेशी सरकार को भला इस बात में क्यों रुचि होने लगी? उस समय हमारी रेलगाड़ियों के इंजन, डिब्बे और पटरियाँ, सभी कुछ इंगलैंड से आता था। इससे इंगलैंड के कारखानों को करोड़ों रुपयों की आमदनी होती थी। ब्रिटिश सरकार इस आमदनी को आसानी से छोड़ना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने भारत की जनता की इस पुकार पर ध्यान नहीं दिया।

पर तुम जानते हो कि कोई भी देश तब तक सच्चे अर्थों में स्वाधीन नहीं हो सकता जब तक कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न हो। और इस आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है कि देश की ज़रूरत की सब चीज़ें देश में ही बनाई जाएँ।

तुमने पढ़ा भी होगा कि गांधीजी के नेतृत्व में जब आज़ादी की लड़ाई चल रही थी तब 'स्वदेशी' का नारा भी बहुत ज़ोरों से लगाया जा रहा था। इस नारे का मतलब यही था कि हम भारतीयों को अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ स्वदेश में ही बनानी चाहिए और अपने देश में बनी वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए।

तो, स्वतन्त्रता मिलने के बाद हमारी सरकार ने जहाँ अन्य क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने का प्रयत्न किया वहाँ रेल के सामान के क्षेत्र में भी। इनमें सबसे कठिन काम रेल के इंजन बनाना था। तुम ने अवश्य ही स्टेशन पर किसी रेल के इंजन को पास से देखा होगा। तब तुम्हें पता लगा होगा कि यह इंजन कितना विशाल और पेचीदा होता है। उसके बनाने में सैकड़ों मन लोहा लगता है और उसमें हज़ारों छोटे-बड़े पुर्जे होते हैं।

ऐसे भारी-भारी इंजन का कारखाना स्थापित करना कोई आसान बात नहीं थी। पर दृढ़ निश्चय से कौन-सा कार्य सिद्ध नहीं हो सकता? इसलिए रेल का इंजन बनाने का कारखाना स्थापित करने के लिए उचित स्थान की खोज की जाने लगी। ऐसा स्थान पश्चिमी बंगाल में बिहार की सीमा के निकट मिला। स्थान का नाम था मिहिजाम जो आसनसोल के निकट था। कारखाना बनाने केलिए पथरीली ज़मीन की आवश्यकता होती है। यहाँ विस्तृत और सस्ती पथरीली ज़मीन थी। कारखाने में काम आनेवाले कच्चे माल की आसपास में बहुतायत थी। विशेष-कर कोयले और लोहे की। शक्ति के लिए दामोदर-घाटी योजना की बिजली की और अजय नदी के पानी की भी सुविधा थी। नए नगर की रचना केलिए उत्तम जलवायु और मनोहारी दृश्यवाले स्थानों को प्राथमिकता दी जाती है। उस दृष्टि से भी यह स्थान संपन्न था। एक बात यह भी थी कि कलकत्ते का प्रसिद्ध बंदरगाह यहाँ से दूर नहीं था। विदेशों से आनेवाले माल उतारने के लिए इस बंदरगाह की भी यहाँ सुविधा थी।

इन्हीं सब कारणों से यहाँ सन् 1948 में इंजन बनाने के एक विशाल कारखाने की स्थापना की गई। इसका नामकरण स्वर्गीय देशबन्धु चित्तरंजन दास के नाम पर किया गया। श्री चित्तरंजत दास स्वतंन्त्रता-संघर्ष के एक अग्रणी नेता थे। उनके बारे में तुम विस्तार से स्वतंन्त्रता-संघर्ष के इतिहास में पढ़ोगे।

कारखाने की स्थापना के साथ ही इतनी गति, कुशलता, और उत्साह से काम आरंभ हुआ कि पाँच साल के छोटे से समय में ही यहाँ से भीमकाय इंजन बनकर निकलने लगे। रेल की पटरियाँ और डिब्बे तो देश में बनने लगे थे। अब चित्तरंजन के कारखाने से हमारा देश इंजनों के बारे में भी आत्मनिर्भर हो रहा है।

इस कारखाने में आधुनिकतम यन्त्र लगे हैं। विभिन्न प्रकार के पुर्जों के लिए साँचे बनाने तथा ढलाई और लोहारी के काम अलग-अलग विभागों में होते हैं। साँचों के बनाने, इस्पात को पिघलाने, ठीक नाप के कल-पुर्जों तथा औज़ारों के निर्माण और उनकी परख करने की क्रियाएँ साथ साथ चलती हैं। पाँच हज़ार पुर्जों को यथाविधि जोड़कर भाप से चलनेवाला पूरा इंजन दो दिन में तैयार कर देना इस कारखाने का चमत्कार है।

कोयले और भाप की शक्ति से चलनेवाले इंजनों का प्रयोग अब कम होता जा रहा है। उनकी जगह पर डीज़ल और बिजली से चलनेवाले इंजनों का प्रयोग अधिक होने लगा है। ये इंजन कहीं अधिक तेज़ चल सकते हैं और इनसे वातावरण में धुआँ-धक्कड़ नहीं होता। इसी विचार से अब चित्तरंजन में बिजली से चलनेवाले

इंजनों का भी निर्माण होने लगा है। आगामी कुछ वर्षों में जब भाप से चलनेवाले इंजन बनने बन्द हो जाएंगे तब इस कारखाने में बिजली से चलनेवाले इंजन ही बना करेंगे।

एक इंजन बनाने में लाखों रुपये लगते हैं। इससे तुम इस काम की विशालता और उसके महत्व का अनुमान लगा सकते हो, वैसे जब तुम यहाँ आओगे तो स्वयं ही सब कुछ देख सकोगे।

जैसा कि मैं ने अपने पिछले पत्र में लिखा था, मुझे रहने के लिए यहाँ सुविधाजनक क्वार्टर रेल-बस्ती में मिल गया है। इसमें बिजली और साफ़ पानी की व्यवस्था भी है। बिजली यहाँ बड़ी सस्ती है।

रेल-बस्ती में बहुत-से मुहल्ले हैं जिनके अपने-अपने बाज़ार हैं। बस्ती में क्लब, सिनेमा घर, स्कूल, अस्पताल, पार्क, खेल के मैदान आदि भी बने हैं। यहाँ की सड़कें चौड़ी-चौड़ी तथा साफ़ सुथरी हैं।

तुम सोचोगे कि इस तरह की सुविधाएँ तो हर शहर में होती ही हैं; इसमें क्या विशेष बात हुई। तुम्हें बताऊँ कि यहाँ की विशेषता एक तो यह है कि बस्ती बड़ी जल्दी बनकर तैयार हो गई। अभी सन् 1948 तक यहाँ ऊँची-नीची ऊसर भूमि पर संथाल लोग अपने पशुओं को चराते थे। किंतु कारखाना चालू होने के तीन वर्ष के भीतर ही सात-आठ वर्गमील क्षेत्र पर यह स्वच्छ, आधुनिक तथा स्वयं-संपूर्ण उद्योग-नगरी बनकर तैयार हो गई। दूसरी विशेषता इस नगरी की एकरूकता है। सभी मुहल्लों में एक-जैसे बाज़ार, एक-जैसे अस्पताल और एक ही तरह के स्कूल आदि हैं।

इस पत्र से चित्तरंजन के कारखाने और उसकी बस्ती का तुमको कुछ अनुमान हो जाएगा और जब तुम आकर इसे देखोगे तो इसे समझने में सहायता मिलेगी।

आशा है, तुम सानंद हो। मुन्ना और लल्ली को प्यार।

शुभेच्छु,

तुम्हारा मामा।

दीपिका

हो सका––यहाँ भूतकाल नहीं है। इस में क्रियापूर्णता का अर्थ है।

ग्रीष्मावकाश = ग्रीष्म का अवकाश, गर्मी की छुट्टी
इंजन = Engine
रेल-बस्ती = Railway Colony
जानना (क्रि) जानकार (सं) = जाननेवाला
जानकारी (भा सं) = ज्ञान
कल (स्त्री) = यन्त्र (पु)
कारखाना (पु) = Factory
पुर्जा (पु) = भाग
मशीन (स्त्री) = Machine
कल-पुर्जे = यन्त्रों के भाग
मँगाना (स्त्री) = To order and get down
चाल (स्त्री) = चलने की रीति
बाहर = विदेशों में (इस संदर्भ में)
माँग = Demand

डिब्बा	=	Bogey, Compartment
पटरियाँ	=	Rail-lines
आमदनी (स्त्री) (उच्चारण) आमद + नी	=	Income, आय
आसानी से	=	Easily
पुकार	=	माँग, Call, Demand
आत्मनिर्भर (वि)	=	Self-sufficient आत्मनिर्भरता (भा. सं)
नारा (पु)	=	Slogan, മുദ്രാവാക്യം
नारा लगाना	=	മുദ്രാവാക്യം മുഴക്കുക, Shout a slogan
पेचीदा	=	സങ്കീർണ്ണമായ, Complicated
लोहा	=	Iron
पथरीली (वि) ज़मीन	=	ज़मीन जहाँ मज़बूत पत्थर है
कोयला (पु)	=	Coal
दामोदर घाटी योजना	=	Damodar Valley Project
सुविधा	=	Convenience
अग्रणी	=	प्रमुख
भीमकाय	=	जिसका शरीर बड़ा है
भीम	=	बहुत बड़ा
काय	=	शरीर
साँचा	=	Mould, മൂശ
ढलाई	=	ढालने का काम
ढालना	=	മൂശയിൽ വാർക്കുക, Cast in a mould

इस्पात	=	Steel
पिघलना	=	ഉരുകുക, Melt
नाप	=	Measurement
औज़ार(पु)	=	Implements, പണി ആയുധങ്ങൾ
परख(स्त्री)	=	परीक्षा
भाप	=	Steam
चमत्कार	=	अद्‌भुत कार्य
धुआँ	=	പുക
आगामी	=	भविष्य के
मुहल्ले	=	शहर के भाग
शुभेच्छु	=	शुभकामना करनेवाला

प्रश्न

I (1) चित्तरंजन में क्या बनाता है ?

(2) उसको यह नाम कैसे पड़ा ?

(3) चित्तरंजन का कारखाना आज जिस स्थान पर है, उस स्थान को चुनने का क्या कारण है ? (पाँच वाक्यों में लिखो)

(4) स्वदेशी आन्दोलन का माना क्या है ? (दो वाक्यों में)

(5) अंग्रेज़ों ने हमारे देश में ऐसा कारखाना क्यों न बनवाया? (दो तीन वाक्यों में लिखो)

II. पाँच-छह वाक्यों का एक-एक खण्ड लिखो:–

(1) चित्तरंजन की रेलबस्ती का वर्णन।

(2) चित्तरंजन का वर्तमान और भविष्य।

(3) चित्तरंजन के निर्माण की प्रेरणा।

III. भाववाचक संज्ञा लिखो:–

कम, खुश, आत्मनिर्भर, आज़ाद, ज़रूर, स्वतन्त्र, आवश्यक, अपना, विशाल, कुशल, आसान।

IV. मातृभाषा में अनुवाद करो:–

(1) यन्त्रों का निर्माण करना।

(2) बड़े बड़े यन्त्रों की माँग।

(3) स्वदेशी का नारा।

(4) आगामी वर्षों में।

(5) भाप से चलनेवाले इंजन।

(6) ऊँची-नीची ऊसर भूमि।

V. रेखांकित शब्द के बदले कोष्ठक के शब्द का प्रयोग करो:–

(1) मैं <u>खुश</u> हूँ। (खुशी)

(2) देश में कल कारखानों की <u>कमी</u> थी। (कम)

(3) बड़ी बड़ी <u>मशीनें</u> विदेशों से मँगाई जाती थीं। (यन्त्र-बहुवचन)

(4) रेल का सारा <u>सामान</u> विदेशों से आता था। (चीज़-बहुवचन)

(5) लोगों की ओर से लगातार माँग की जा रही थी। (लोग)

(6) ऐसे इंजन का कारखाना स्थापित करना कोई आसान बात नहीं थी। (विपरीत शब्द)

(7) आवश्यकता की वस्तुएँ स्वदेश में ही बनानी चाहिए। (सामान-बहुवचन)

(8) यह स्थान संपन्न था। (जगह)

(9) यहाँ से भीमकाय इंजन बनकर निकलने लगे। (मशीनें)

(10) यहाँ की सड़कें चौड़ी-चौड़ी और साफ़-सुथरी हैं। (रास्ता-बहुवचन)

VI. वाक्यों में प्रयोग करो:–

अनुमान लगाना, काम में लगना, काम में लगाना, चालू होना, रुपया लगाना।

पाठ 9

आगे बढ़ता पंजाब

भारत-भर में अनाज की उपज का दो-तिहाई भाग पंजाब में पैदा हो रहा है। अनाज के कमीवाले प्रदेशों को भेजने के बाद जो अनाज बच जाता है, उसे गोदामों में रख दिया जाता है। यहाँ पर जगह-जगह कोल्ड स्टोरेज हैं जहाँ मौसम के असर से बचाये रखने के लिए सेव, संतरे, आलू बगैरह भर दिये जाते हैं। एक विदेशी पत्रकार ने नये पंजाब का दौरा लगाने के बाद यह कहा था कि वह दिन दूर नहीं, जब पंजाब की भारत के लिए ठीक वही स्थिति हो जाएगी जो अमरीका केलिए कैलीफ़ोर्निया की है। कैलीफ़ोर्निया संयुक्त राज्य अमरीका का एक राज्य है जिस में इतना अधिक अनाज़ पैदा होता है कि पूरे देश की ज़रूरत पूरी करने के अलावा दुनिया-भर के ज़रूरतमंद देशों को भी अन्न भेजा जाता है।

पंजाब की यह स्थिति किस तरह बन सकी है? इस प्रश्न का उत्तर केवल यह है कि पंजाबियों की मेहनत है जो धरती में से सोना उगलवा रही है। मेहनत के साथ-साथ हिम्मत भी है।

केवल उदाहरण के लिए लुधियाना के निकटवर्ती इस गाँव के एक परिवार की कहानी सुन लीजिए। दो भाइयों को दस एकड़ धरती का लगभग बंज़र टुकड़ा मिला था। इन्होंने तन-तोड़ मेहनत कर के पहले उस धरती को हमवार किया, फिर एक तरह से खुद ही बैल बनकर जुताई की, कर्ज लेकर खाद खरीदी और बीज खरीदे। खुद ही कुआँ खोदा, पानी निकाला और सिंचाई की।

साथ ही कहीं और से ऋण लेकर सौ चूजे खरीद लाए। उन्हें, पाला, बड़ा किया, अंडे पैदा कराये और बेचे। फिर और चूजे ले आये और देखते ही देखते अच्छा-खासा पौल्ट्रीफ़ार्म (मुर्गीखाना) बना लिया। मुर्गीखाने की कमाई से रूपये जोड़ जोड़कर एक ट्रैक्टर खरीदा। फिर सरकार से और कर्ज़ लेकर ट्यूबवेल लगवा लिया। ट्यूबवेल और ट्रैक्टर ने इन दोनों भाईयों के मेहनत के साथ मिलकर चमत्कार दिखाने शुरू किये। बंजर धरती ने साल में तीन फसलें देनी शुरू कर दीं। एक एक एकड़ में से पचास-पचास मन गेहूँ पैदा होने लगा। केवल दस वर्षों में ही केवल दस एकड़ धरती से इन दोनों ज़मीन्दार भाइयों ने इतना पैसा कमा लिया कि अपने बच्चों को ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलवाने के अलावा एक एक मकान भी बनवा लिया। पंजाबी भाषा में ज़मीन्दार शब्द किसान केलिए इस्तेमाल होता है।

खेतिहर मज़दूरों की पंजाब में बड़ी कमी हो गई है, क्योंकि यहाँ लगभग हर किसान के पास अपनी ज़मीन है और किसी के खेत में मज़दूरी करना पंजाबी किसान अपनी हेठी समझता है। इसलिए अब राजस्थान के सूखा–ग्रस्त इलाकों तथा पूर्वी यू० पी० और बिहार के खेतिहर मज़दूर पंजाब के खेतों में काम करने आने लगे हैं; क्योंकि यहाँ खेतिहर मज़दूर को सौ रूपये महीना नकद, दोनों वक्त का खाना तथा चाय मुफ़्त मिलती है। लुधियाना, अमृतसर और फ़िरोज़पुर में तो मज़दूर का दैनिक वेतन तेरह रुपये है अर्थात् चार सौ रुपये माहवार।

पंजाब की खुशहाली सिर्फ खेतों और लघु उद्योगों के बल पर ही है। यहाँ बड़े-बड़े कारखाने आज तक नहीं खुल सके। कारण

यह है कि सीमा प्रदेश होने के कारण बड़े उद्योगपति यहाँ पर पूँजी लगाना ठीक नहीं समझते। इसलिए मज़बूर होकर पंजाबियों को छोटे छोटे उद्योग-धन्धे लगाने पड़े।

सिलाई मशीन के पुर्जे बनाने का लघु उद्योग भी पंजाब का खासा धन्धा है। पहले ये पुर्जे जापान से मँगाए जाते थे।

हौज़री के काम में तो पंजाब का कोई मुकाबला ही नहीं है। यहाँ की बनी हुई बनियानें, जांघिये और मोज़े वगैरह तो रूस तथा अन्य देशों में भेजे जाते हैं।

लगन, मेहनत और हौसले के बल पर पंजाब के लोगों ने न केवल बंटवारे के तूफ़ान झेल लिए; बल्कि उलटे पहले से भी अधिक खुशहाली पैदा कर ली है। सिर्फ़ अपने प्रदेश में ही नहीं, देश के बाकी भागों में जहाँ जहाँ भी पंजाबी गये, इन्होंने अपनी मेहनत और कामयाबी की मिसालें पैदा कर दीं। इस समय पूरे भारत का परिवहन व्यापार लगभग पंजाबियों के हाथ में है। दुनिया का शायद ही कोई देश ऐसा हो जहाँ पंजाबी न पहुँचे हों। सिर्फ़ कनाडा और अमरीका में चालीस हज़ार पंजाबी बसे हुए हैं।

आज भारत में जो हरित क्रांति की चर्चा सुनाई दे रही है, इसकी असली हरियाली पंजाब में ही दिखाई देती है। आप को यह जानकर तो वास्तव में आश्चर्य होगा कि पंजाब में भिखारियों की संख्या देश के अन्य राज्यों की तुलना में इतनी कम है कि न होने के बराबर कही जा सकती है।

पंजाब के गावों में चौपालें लगभग खतम हो चुकी हैं, क्योंकि लोगों के पास अब इतना फालतू वक्त ही नहीं रह गया कि चौपाल

पर बैठकर समय काटा जाए। घर घर में रेडियो आ गये हैं तथा मनोरंजन के कई अन्य साधनों का उपयोग होने लगा है।

सलवार और तहमद का स्थान अब पतलून और पाजामा ले चुका है। निरक्षरता इस प्रदेश से भाग चुकी है। बीमारियाँ बहुत घट गई हैं। महामारियाँ कोई जानता नहीं।

अच्छे घर, पौष्टिक भोजन, बढ़िया कपड़े, उच्च शिक्षा और रहन-सहन के आधुनिक तौर-तरीके देखकर पंजाब के उठे हुए जीवन-स्तर का सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

लेखक—सुदर्शन चोपड़ा

दीपिका

गोदाम	=	Godown
सेव	=	Apple
संतरा	=	Orange
ज़रूरतमंद देश	=	Needful countries
सोना उगलवाना	=	अच्छी उपज उत्पन्न करना
निकटवर्ती	=	समीप रहनेवाला, पास का
परिवार	=	कुटुंब
बंजर	=	खेती के अयोग्य जमीन, ऊसर भूमि
हमवार करना	=	बराबर करना, समतल करना
जुताई (भा. सं.)	=	जोतने की क्रिया
खाद (स्त्री)	=	Manure, വളം
सिंचाई (भा.सं.)	=	सींचने का काम
चूजा	=	मुर्गी का बच्चा

ट्यूबवेल = Tube well

चमत्कार = अद्भुत बात, करामात, Miracle, wonder

एकड़ = Acre

खेतिहर = खेती करनेवाला, किसान

हेठी = हीनता, अपमान, Insult

सूखा-ग्रस्त = वर्षा के अभाव के कारण सूखा हुआ

इलाका = Region, zone

नकद = Ready Money

खेतिहर मज़दूर = Agricultural Labourer
കൃഷിത്തൊഴിലാളി

माहवार = प्रतिमास, Monthly

खुश-हाली = सम्पन्नता, समृद्धि

लघु उद्योग = Small Industries

पूँजी = Capital

पुर्जा = मशीन का भाग

खासा = विशेष, मुख्य, उत्तम

हौज़री = मोज़े, बनियान, इत्यादि

बनियान = Banian

जांघिया = Under-wear

मोज़ा = Stockings

हौसला = उत्साह

बंटवारा = विभाजन (यहाँ पंजाब का विभाजन, 1947 में)

तूफ़ान (पु) = Storm, आँधी

बंटवारे का तूफ़ान = भारत से पाकिस्तान का अलग होना, जो तूफ़ान के समान भयंकर था।
झेलना = सहना
कामयाबी = सफलता
मिसाल (स्त्री) = दृष्टान्त (पु)
परिवहन = Transportation
चौपाल (स्त्री) = चौक जहाँ लोग समय बिताने के लिये जमा होते हैं।
फ़ालतू = बेकार
सलवार = a kind of trousers
तहमद = लुंगी
पतलून = Pants
तौर-तरीका = चाल-ढाल, चाल-चलन
जीवन-स्तर = Standard of living

वाक्य रचना

दौरा लगाना = To tour

मन्त्री ने अकाल पीड़ित प्रदेशों का दौरा लगाकर जनता की बुरी हालत जान ली।

तन-तोड़ मेहनत करना = कठिन परिश्रम करना।

रमेश पाँच संतानों का पिता है। वह तन-तोड़ मेहनत करता है। फिर भी उसके घर में गरीबी है।

मज़बूर होना = To be helpless

जब हमारा खर्च बढ़ जाता है और साथ साथ आमदनी कम हो जाती है तब हम मज़बूर होकर दूसरों से कर्ज़ लेते हैं।

नकद = ഒറാക്കം, Cash payment

दूकानदार ने कहा कि तुम्हारे पास रुपया नहीं है तो साड़ी न लेना। मुझे तो साड़ी का दाम नकद मिलना चाहिए।

मुकाबला नहीं = समानता नहीं।

प्रकृति सौन्दर्य में केरल का कोई मुकाबला नहीं। केरल के समान सुन्दर प्रदेश दूसरा कोई नहीं।

समय काटना = To waste time

सतीश, मुझे मालूम हो गया है कि तू आजकल स्कूल नहीं जाता और शहर में घूमते घूमते समय काटता है।

प्रश्न

I. जवाब लिखो:–

(1) विदेशी पत्रकार ने नये पंजाब की तुलना कैलिफ़ोर्निया से क्यों की ?

(2) "पंजाबियों की मेहनत है जो धरती में से सोना उगलवा रही है।" पठित उदाहरण द्वारा इस कथन का समर्थन करो।

(3) पंजाब में खेतिहर मज़दूरों की कमी क्यों हो गई है ?

(4) राजस्तान और बिहार के खेतिहर मज़दूर क्यों पंजाब के खेतों में काम करने आने लगे हैं ?

(5) "इसलिए मजबूर होकर पंजाबियों को छोटे छोटे उद्योग धन्धे लगाने पड़े।" किस कारण मज़बूर होकर ? कौन-कौन से उद्योग-धन्धे विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ?

(6) पंजाब के लोगों की मेहनत और कामयाबी की कुछ मिसालें बताओ।

(7) पंजाब के उठे हुए जीवन–स्तर के बारे में एक खण्ड लिखो।

II. मातृभाषा में अनुवाद करो:–

अनाज के कमीवाले प्रदेश।
मौसम के असर से बचाना।
वह दिन दूर नहीं।
दुनिया भर के ज़रूरतमंद देश।
दैनिक वेतन।
चार सौ रुपये माहवार।
हरित क्रांति।
लोगों के पास फ़ालतू वक्त नहीं है।

III. अनुवाद कर के अर्थ-भेद स्पष्ट करो:–

पालतू	—	फ़ालतू
रहना	—	रखना
दौरा	—	दौड़ा
कई	—	कोई
बड़ा	—	बढ़ा
मज़दूर	—	मजबूर

IV. वाक्यों में प्रयोग कर के अर्थ-भेद स्पष्ट करो:–

ओर — और

V. वाक्यों में प्रयोग करो:–

अलावा, ज़रूरी, इस्तेमाल, माँगना, फ़ालतू

व्याकरण–अभ्यास

I. 'दो.....लगवा लिया।' यह खंड वर्तमानकाल में लिखो।

सूचना :—ऐसे शुरू करो––

दो भाइयों को.....मिलता है। वे.....हमवार करते हैं.....

II. भविष्यकाल में लिखो:–

(1) हरित क्रांति की असली हरियाली पंजाब में दिखाई देती है।

(2) बीमारियाँ बहुत घट गई हैं।

(3) पंजाब में बने मोज़े वगैरह अन्य देशों में भेजे जाते हैं।

(4) पूरा परिवहन व्यापार पंजाबियों के हाथ में है।

(5) मज़दूरी करना किसान अपनी हेठी समझता है।

III. शुद्ध करो:– (क्रिया का काल बदले बिना)

(1) पंजाबियों ने खूब परिश्रम करते हैं।

(2) पंजाब में सब ने काम मिलता है।

(3) लोग छोटे छोटे उद्योग करने पड़ता है।

(4) उन्होंने बड़े बड़े कारखाने खोल सके।

(5) पंजाब के गाँवों में चौपालें खतम ही गये हैं।

IV. रेखांकित शब्द के बदले कोष्टक के शब्द का प्रयोग करो:–

(1) लोगों ने मेहनत और कामयाबी की मिसालें पैदा कर दीं। (नमूना-बहुवचन)

(2) पंजाबियों की मेहनत है जो धरती से सोना उगलवाती है। (परिश्रम)

(3) उन्होंने अनाज पैदा कराया। (मुर्गी का अंडा-बहुवचन)

(4) पंजाबियों की हिम्मत अजीब है। (धैर्य)

V. कोष्टक की जगह वहाँ दी हुई क्रिया के उचित रूप का प्रयोग करो:–

किसानों ने कर्ज (ले), खाद (खरीद), कुआँ (खोद), पानी (निकाल) और खेतो (कर)

पाठ 10

भिक्षुक

वह आता–

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को–भूख मिटाने को
मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।
भूख से सूख ओंठ जब जाते,
दाता—भाग्यविधाता से क्या पाते?—
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर अड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं खड़े हुए।

ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

कवि—सूर्यकान्तत्रिपाठी 'निराला'

दीपिका

महाकवि निराला की इस कविता में एक भिखारी और उसके दो बच्चों का करुण चित्र अंकित हुआ है।

भिक्षुक = भिखारी
टूक = टुकड़े
कलेजा = हृदय
पछताना = रोना
पथ पर = रास्ते पर
लकुटिया टेक = छड़ी का आसरा लेकर, വടി ഊന്നിക്കൊണ്ട്
मुट्ठी भर = A handful, ഒരു പിടി
दाना = अन्न
फटी-पुरानी = Torn and old, കീറിപ്പറിഞ്ഞ, പഴകിയ
झोली = कपड़े की थैली, മാറാപ്പ്
बायाँ हाथ = Left hand
दाहिना हाथ = दायाँ हाथ, Right hand
बढ़ाना = आगे करना
दाता = देनेवाला
भाग्यविधाता = भाग्य का निर्णय करनेवाला
घूँट = ഒരു കവിൾ വെള്ളം
A mouthful of water
जूठी पत्तल = Leaf thrown away after eating, എച്ചിലില
झपट लेना = To jump on and take
अड़े हुए = तैयार, जमे हुए।

अभिमन्यु = महाभारत का वीर, वीर अर्जुन का पुत्र, जिसने अकेले एक पूरी सेना का सामना किया था ।

अभिमन्यु-जैसे = अभिमन्यु के समान

दु:ख को खींच लूँगा = तुम्हारे दु:ख को मैं अपनाऊँगा

प्रश्न

I. सरल शब्दों में अर्थ स्पष्ट करो:–

(1) मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता ।
(2) दाता भाग्यविधाता से क्या पाते ?
(3) घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते ।
(4) ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत ।
(5) अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम ।
(6) तुम्हारे दु:ख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा ।

II. नीचे दिये हुए आशय जिन पंक्तियों में हैं उनको स्मरण से लिखो:–

(1) जूठे पत्ते चाटनेवाले बच्चोंपर कुत्ते झपट पड़ते हैं ।
(2) भिखमंगे बच्चों को कवि का आश्वासन ।
(3) भीख माँगनेवाले बच्चों को दाता से कुछ नहीं मिलता; रोते रह जाते हैं ।
(4) कवि के हृदय में भिक्षुक के प्रति अपार सहानुभूति है ।
(5) कवि के मन में भिक्षुक के बच्चों के भविष्य के बारे में प्रबल आशा है ।

पाठ 11

अर्जुनसिंह की कथा

अर्जुनसिंह नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फ़ौज के एक प्रमुख योद्धा सिपाही थे, जिन्होंने नेताजी के इस मंत्र को सुन रखा था कि 'तुम मुझे खून दो; मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।'

उन दिनों आज़ाद हिन्द फ़ौज में भरती होने के लिए देश के नवयुवकों में अद्‌भुत उत्साह था। सैकड़ों स्वतन्त्रता-प्रेमी भारतीय नवयुवक रोज़ दूर दूर से चलकर आज़ाद हिन्द फ़ौज़ में भरती होने के लिए पहुँच जाते। उन दिनों रंगरूटों को भरती करने का दायित्व जनरल शाहनवाज़ पर था। जनरल शाहनवाज़ सैनिक अफ़सर भी रहे और बाद में भारत सरकार में राज्यमंत्री भी रहे। हरियाणा के इस वीर सपूत अर्जुनसिंह की कहानी सुनाते-सुनाते आज भी शाहनवाज़ की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

उन दिनों अर्जुनसिंह अपनी बूढ़ी माता के साथ हरियाणा के औद्योगिक शहर पानीपत में रहता था। अर्जुनसिंह ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। छोटा-सा मकान और चार-पाँच गायें। दूध पीना, कसरत करना और अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करना यही अर्जुनसिंह का मुख्य काम था। उसकी उम्र अभी केवल सत्रह वर्ष की होगी। उसी समय उस में आज़ाद हिन्द फ़ौज़ में भरती होने की धुन सवार हुई। वह सीधा भरती के दफ़्तर पहुँचा और पंक्ति में जाकर खड़ा हो गया। उस समय एक सूबेदार जवानों की शारीरिक और स्वास्थ्य संबंधी जाँच-पड़ताल करता और उस से

कुछ प्रश्न करता। इसी बीच सूबेदार ने वीर अर्जुनसिंह का चौड़ा सीना नापा और चिल्लाकर जनरल शाहनवाज़ से बोला—"सर, इसकी छाती तो बिना फुलाए तैंतालीस इंच है।"

शाहनवाज़ ने जब इस नवयुवक को देखा तो देखते ही रह गए। सोने जैसा बदन, आँखों में तेज़, मन में देश को आज़ाद करवाने का संकल्प और ऊपर से आज़ाद हिन्द फ़ौज़ में भरती होने की लगन। जनरल शाहनवाज़ बोले—"कहाँ के रहनेवाले हो?"

युवक अर्जुनसिंह ने उत्तर दिया—"पानीपत।"

"तुम्हारा नाम?"

"अर्जुनसिंह।"

इस पर जनरल ने प्रश्न किया कि घर में और कौन-कौन हैं? उत्तर में अर्जुनसिंह ने कहा कि केवल एक बूढ़ी माता। अर्जुनसिंह से यह उत्तर सुनते ही जनरल शाहनवाज़ ने नज़रें झुकाकर मुँह फेर लिया। अर्जुनसिंह एकदम हैरान और परेशान हो गया। फिर कुछ देर बाद जनरल शाहनवाज़ ने कहा—"तुम सेना में भरती नहीं किए जा सकते।"

यह शब्द सुनते ही अर्जुनसिंह पर जैसे बिजली गिर पड़ी हो। वह झुककर जनरल के पास पहुँचा और कहने लगा—"क्यों सर, मेरे भीतर कौन सी कमी है?"

"मैं तुम्हारे हौसले और बहादुरी की दाद देता हूँ, लेकिन हमारे लिए नेताजी का सख्त आदेश है कि जो जवान अपने परिवार में अकेला हो, उसे सेना में भरती न किया जाए। तुम घर जाओ

और अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करो। इस में इतना निराश होने की कोई ज़रूरत नहीं।"

अर्जुनसिंह अलग एक कोने में गरदन झुकाये खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर कुछ ऐसा भाव झलक रहा था, जैसे किसी ने उसका अपमान कर दिया हो। वह भरती होनेवाले दूसरे जवानों को ललचाई आँखों से देखने लगा और अपनी फूटी किसमत पर रोने लगा।

जब वह अपना मुँह लटकाए घर पहुँचा तो माँ हैरान होकर पूछने लगी – "क्या फौज में भरती हो गये ?" अर्जुनसिंह ने कहा— "जनरल साहब ने कहा है कि जो अपने घर में अकेला है, उसे भरती नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा है कि घर जाकर अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करो।"

माँ अपने वीर बेटे की भावना को समझ गई। वह उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहने लगी, "बेटा, इसमें घबराने की कोई बात नहीं। देश-सेवा के मार्ग में मैं तुम्हारे लिए बाधा नहीं बनूँगी। तुम्हें आज़ाद हिन्द फ़ौज में ज़रूर भरती किया जाएगा।"

और माँ ने अपनी भविष्यवाणी सत्य कर दिखाई। तीन दिन बाद जनरल शाहनवाज़ ने देखा कि वही लंबा-चौड़ा देशभक्त फिर भरती होनेवाले जवानों की लाइन में खड़ा है। उन्होंने उसे अलग से बुलाकर पूछा—"तुम फिर यहाँ क्यों आ गए ? तुम से तो कहा था कि घर जा कर अपनी माँ की सेवा करो।"

अर्जुनसिंह ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा, "मेरी माँ अब नहीं रही। उस ने कल सुबह ही कुए में कूदकर आत्महत्या कर

ली। वह मेरे देश-सेवा के मार्ग में बाधा नहीं बनना चाहती थी।" अर्जुनसिंह के मुँह से ऐसे शब्द सुनकर जनरल की पलकें भीग गईं। उन्होंने अर्जुनसिंह को आज़ाद हिन्द फ़ौज में भरती कर लिया और अवसर निकालकर उसे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के पास भी ले गए। नेताजी ने पूरी कहानी सुनने के बाद अर्जुनसिंह से कहा--"अर्जुनसिंह, तुम वीर माता के वीर पुत्र हो। मुझे विश्वास है कि तुम देश की आज़ादी के लिए अन्तिम दम तक लड़ोगे और आज़ाद हिन्द सेना के बाकी जवान तुम पर गर्व करेंगे।"

अर्जुनसिंह धीरे-धीरे सैनिक से अफ़सर हो गया। कोहिमा और इम्फाल के मैदानों में आज़ाद हिन्द फ़ौज़ और ब्रिटिश सैनिकों के बीच जमकर लड़ाई हुई, जहाँ अर्जुनसिंह को ब्रिटिश सैनिकों ने घेर लिया। उसका सारा शरीर गोलियों से छलनी हो गया था। लेकिन इस पर भी उसने अपने सब साथियों को वहाँ से हेडक्वार्टर जाने का आदेश दिया और उनके हाथ सभी आवश्यक कागज़ात और वायरलैस सैट सुरक्षित वापस पहुँचा दिया। इस लड़ाई के अगले दिन जनरल शाहनवाज़ टार्च लेकर स्वयं अपने ज़ख्मी सैनिकों की खोज़ में निकले। उन्हीं के शब्दों में--

"मैं ने देखा अर्जुनसिंह के पूरे शरीर में गोलियों से बने छेद थे ...वह हिलने-डुलने में भी लाचार था। उस ने मुझ से कहा कि आप तो नेताजी के पास जाएँगे ही। उनसे मेरा आखिरी 'जय हिन्द' बोल दें और कहें कि अर्जुनसिंह ने उन से जो वादा किया था, उसे वह भूला नहीं है। उस ने अपने वादे को पूरा किया है।

"अर्जुनसिंह ने इतना कहकर अन्तिम साँस ली। मैं जब वहाँ से लौटा और जब सारी बातें मैं ने नेताजी को बतलाई तो वे दो मिनट इस प्रकार मौन रहे, जैसे उनसे कुछ बोला नहीं जा रहा हो। फिर उन्होंने उस स्थान पर एक स्मारक बनवाने को कहा, जिस स्थान पर वीर अर्जुनसिंह ने अपनी अन्तिम साँस ली थी।"

लेखक—योगराज थानी

दीपिका

आज़ाद हिन्द फ़ौज	=	Indian National Army (I.N.A.)
सैकडों	=	Hundreds
रोज़	=	प्रतिदिन
भरती होना	=	To join, to get admitted
रंगरूट	=	Recruit
राज्यमन्त्री	=	Minister of State
भरती करना	=	To admit
दायित्व	=	उत्तरदायित्व
औद्योगिक शहर	=	Industrial Town
पढ़ा-लिखा (वि)	=	Educated, शिक्षित
धुन सवार हुई	=	प्रबल इच्छा हुई
भरती का दफ़्तर	=	Recruiting office
सीधा	=	Straight
पंक्ति	=	Line
जाँच, जाँच-पड़ताल	=	Test, examination, പരിശോധന

चौड़ा--चौड़े-चौड़ी

सीना (पु) = छाती (स्त्री) chest

चौड़ा सीना (पु) = चौड़ी छाती (स्त्री)

बिना फुलाए = Unexpanded

तैंतालीस = 43

देखते ही रह गये = अश्चर्यचकित हो गये

बदन = शरीर

सोने जैसा = स्वर्ण वर्ण का

संकल्प = दृढ़ निश्चय

लगन = प्रबल इच्छा, प्रेम

करना (सकर्मक)---करवाना (प्रेरणार्थक)

और (वि) = अन्य

नज़र = दृष्टि

मुँह फेरना = To turn the face away

एकदम = बिलकुल

हैरान = विवश, परेशान

बिजली गिरना = ഇടിവെട്ടുക, To be struck by lightning

बिजली गिर पड़ी हो---(संभावना, कल्पना)

जनरल के शब्द बिजली के समान थे। बिजली गिरने पर जैसा अनुभव होता है, वैसा ही अनुभव अर्जुनसिंह को हो गया था।

हौसला (पु) = जोश

बहादुरी (स्त्री) = वीरता

दाद (स्त्री) देना = प्रशंसा करना

सख्त	=	कठोर, Strict
सख्त आदेश	=	Strict order
गरदन झुकाना	=	सिर नीचा करना, मुँह लटकाना
ललचाई आँखें	=	लालच भरी आँखें
फूटी किसमत	=	दुर्भाग्य
पलकें	=	Eye lashes
पलकें भीग गईं	=	आँखों में आँसू आये
अवसर निकालना	=	To make opportunity
दम	=	श्वास
गर्व	=	अभिमान
मैदान (यहाँ लडाई के)	=	Battle fields
जमकर	=	स्थिरता से, दृढ़तापूर्वक
छलनी	=	Sieve, അരിപ്പ
छलनी होना	=	बहुत छेद होना
कागज़ात (बहुवचन)	=	कागज़ (कागज़ भी बहुवचन है)
जख्मी	=	Wounded, घायल
हिलना-डुलना	=	To move
लाचार	=	Unable, helpless
आखिरी	=	अंतिम
आखिरी जयहिन्द	=	अंतिम अभिवादन
वादा(पु)	=	प्रतिज्ञा (स्त्री)
साँस	=	श्वास
बतलाना	=	बताना, कह देना

प्रश्न

I. जवाब दो:–

(1) अर्जुनसिंह की पारिवारिक स्थिति कैसी थी ?
(2) अर्जुनसिंह का शरीर कैसा था ?
(3) जनरल शाहनवाज़ देखते ही रह गये। क्या ?
(4) अर्जुनसिंह के फ़ौज में भरती होने में कौन-सी कठिनाई थी ?
(5) "अर्जुनसिंह अपनी खोटी किसमत पर रोने लगा।" कब ?
(6) माँ ने अपनी भविष्यवाणी सच कर दिखाई। भविष्य-वाणी क्या थी ? माँ ने क्या किया ?
(7) जनरल की पलकें भीग गईं। कब ?
(8) अर्जूनसिंह से नेताजी ने क्या कहा ?
(9) अर्जुनसिंह ने लड़ाई में कैसी वीरता दिखाई ?
(10) अर्जुनसिंह की अंतिम घड़ियों का वर्णन करो।
(11) नेताजी ने अर्जुनसिंह के प्रति अपनी भावना कैसे प्रकट की?

II. सप्रसंग व्याख्या करो:–

(1) सर, इसकी छाती तो बिना फुलाए तैंतालीस इंच है।
(2) देश-सेवा के मार्ग में तुम्हारी बाधा नहीं बनूँगी।
(3) उसने अपने वादे को पूरा कर दिखाया।
(4) तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।

व्याकरण–अभ्यास

I. कोष्टक में दी हुई धातु के उचित रूप से पूरा करो:–

(1) पुराने ज़माने में गाँव के लोग शाम को रामायण––। (सुन) लेकिन आजकल वे सिनेमा देखने––। (जा)

(2) पाँच वर्ष पहले की बात है। तब हम एक छोटे घर में---। (रह) हमारे पड़ोस में एक गायक---। (रह) वह रोज़ सुबह-तड़के संगीत का अभ्यास---। (कर) हम उसका गान सुनकर---। (उठ)

(3) एक ज़माना था जब हम विदेशी कपड़ों का बहिष्कार ---। (कर) आजकल हम उनका स्वागत---। (कर)

(4) पचास वर्ष पहले मंदिरों में हरिजनों को प्रवेश नहीं---। (मिल) आजकल ऐसा निषेध नहीं---। (हो)

(5) पुराने ज़माने में जनता के नेताओं को राजा लोग---। (चुन)

II. शुद्ध करो:-

(1) आप गाता था, हम सुनता था।

(2) लड़के शोर मचाते हैं, तब मास्टरजी आये।

(3) 1947 में हम आज़ाद हुए। उसके पहले यहाँ अंग्रेज़ शासन करते हैं।

(4) कोलम्बस भारत के लिए रवाना होता है, लेकिन अमरीका पहुँच गया।

(5) गाड़ी पुल पर से चलती थी। तब एक आदमी नदी में कूद पड़ता है और वह डूब मर गया।

पाठ 12

राजा रविवर्मा

जब मैं किशोर वय का था, उसी समय से राजा रविवर्मा की कृतियों से मेरा प्रथम परिचय हुआ था। मुझे अभी तक ठीक से याद है, हमारे दीवानखाने में दो तस्वीरें लगी थीं—एक सरस्वती की और दूसरी लक्ष्मी की थी। बीच में, ज़रा ऊँचाई पर भारत

की मलिका महारानी विक्टोरिया की विशालकाय तस्वीर लगी थी। उन दिनों मैं तस्वीरों की दुनिया में रहा करता था। उन तस्वीरों से मेरे सम्बन्ध स्थापित हो गये थे। मुझे खास तौर से सरस्वती पसंद थीं। वे बहुत कुछ मुझ से कई साल बड़ी मेरी फुफेरी बहन से मिलती-जुलती थीं। महारानी विक्टोरिया मेरी बुआ सरीखी दीखती थीं। मैं सोचता था, महारानी हमारी रिश्तेदार हैं।

बहुत साल बाद मुझे पता लगा कि सरस्वती और लक्ष्मी दो देवियाँ हैं, जिन्हें राजा रविवर्मा ने बनाया है और महारानी विक्टोरिया इंगलैंड की मलिका हैं।

उन दिनों राजा रविवर्मा बहुत लोकप्रिय थे। यदि कोई उनकी लोकप्रियता की तुलना करना चाहे, तो आजकल लता मंगेशकर की लोकप्रियता से उसकी तुलना की जा सकती है। काश्मीर से कन्याकुमारी तक ऐसा कोई हिन्दू घर नहीं था, जहाँ उनकी तस्वीरों को फ्रेम कर के उनकी पूजा न की जाती हो।

राजा रविवर्मा का जन्म 29 अप्रैल 1848 को हुआ था। बालक के रूप में ही कला की ओर उनकी प्रवृत्ति थी और अवलोकन शक्ति में भी उनका जवाब नहीं था। इस सुसंस्कृत परिवार का त्रावनकोर के महाराजा से घनिष्ठ संबन्ध था। दरवार की भाषा संस्कृत थी। अतः बालक रवि की शिक्षा संस्कृत में ही हुई। उन्होंने रामायण, महाभारत और कालिदास के ग्रंथों का अध्ययन किया।

यहीं उनके बाद के धार्मिक और पौराणिक चित्रों की नींव रखी गयी थी। उनको केवल एक व्यक्ति से प्रोत्साहन मिला था और वे थे उनके मामा राजराजवर्मा, जो स्वयं बहुत बड़े कलाकार थे। बालक रवि ने बहुत साल तक चौखट के सहारे खड़े होकर अपने मामा को चित्र बनाते देखा होगा। मामा के साथ बालक रवि त्रावनकोर दरबार गये होंगे, जहाँ सुपरिचित रॉयल एकेडेमिशियन एक अंग्रेज़ कलाकार थियोडोर जेनसन राजपरिवार के व्यक्तिचित्र बना रहा था। यह उनका यूरोपियन चित्रों से पहला परिचय था।

यह उनके जीवन का सब से अधिक रोमांचकारी समय था, बालक रवि ने जेनसन को तैल रंगों का कैनवासों पर प्रयोग करते देखा। वह विधि भारत में पहले कोई नहीं जानता था। यहीं उनकी सौन्दर्य की अवधारणा में नया मोड़ आया। उन्होंने तिरुवनन्तपुरम में राजमहल के पिछले भाग में रहकर चित्रकारी करने का निश्चय किया।

उन्होंने मोडेल्स का प्रयोग करना तथा संयोजन की कला भी सीखी। 1873 में उन्होंने अपने चित्र 'शृंगार करती हुई नायर युवती' पर मद्रास में गवर्णर का स्वर्ण पदक भी जीता। उनकी उम्र तब पच्चीस वर्ष की थी। वे अब सुविख्यात कलाकार बन चुके थे। फिर भी उन्होंने सब कुछ स्वयं ही सीखा था। जेनसन ने उन्हें पढ़ाने या अपने गुर बताने से साफ़ इनकार कर दिया था।

1875 में भी राजा रविवर्मा को अपने एक चित्र पर प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक मिला। जब प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये तो यह तथा अन्य दो चित्र उन्हें भेंट किये गये थे। प्रिंस ने चित्रों की भूरी-भूरी प्रशंसा की और वे यूरोपीयन माध्यम पर एक भारतीय कलाकार का यह अधिकार देख दंग रह गये।

यहाँ से वे बंबई चले गये थे और उनका कार्यक्षेत्र काफ़ी विस्तृत हो गया था। धीरे-धीरे वे बड़े अंग्रेज़ शासकों तथा पश्चिम भारत के कलाप्रेमी रजवाड़ों के निकट संपर्क में आ रहे थे। उनका प्रसिद्ध चित्र 'शकुंतला का दुष्यंत के नाम प्रेमपत्र' ड्यूक ऑफ बकिंघम ने खरीद कर इस युवा चित्रकार के हुनर की प्रशंसा की। पूना की एक चित्र प्रदर्शनी में बड़ौदा के गायकवाड़ ने जब उनके

चित्र देखे, तो वे बहुत प्रभावित हुए और रामायण की कथा पर आधारित चित्रों को बनाने के लिए उन्हें अनुबंधित कर लिया। गायकवाड़ ने उनसे राजपरिवार के लोगों के कई व्यक्तिचित्र भी बनवाये।

अब तो वे नियमित रूप से बंबई तथा देश के अन्य भागों में जाने लगे थे। उत्तर भारत की यात्रा में वे दिल्ली, वाराणसी इलाहाबाद और आगरा भी गये। वे महाराष्ट्रियन सुन्दरता तथा वस्त्र विन्यास के प्रति विशेष रूप से आकर्षित हुए। बंबई के जीवन के सांस्कृतिक परिवेश में वे घुलने-मिलने लगे और उन्हीं दिनों उनका बहुत-सी सुन्दर युवतियों से परिचय हुआ।

बड़ौदा के महाराजा ने 14 चित्र बनवाने के लिए उन्हें पचास हज़ार रुपये भेंट किये। उनके कई मित्र उनके चित्रों को लीथोग्राफ़ी के द्वारा छापना चाहते थे। देर किस बात की थी, बड़ी तत्परता से उन्होंने बंबई के उपनगर घाटकोपर में एक लीथोप्रेस स्थापित किया। इस प्रकार वे देश के पहले लीथोग्राफ़र और कर्मशियल (व्यावसायिक) आर्टिस्ट थे। जैसे-जैसे उनके पौराणिक चित्र छप कर बाहर बाज़ार में आते, उनका यश दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जाता।

1891 में, शिकागो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में उन्हें कई पुरस्कार मिले। यह पहला अवसर था, जब किसी भारतीय कलाकार को विदेश में मान्यता प्राप्त हुई हो।

1904 में उन्हें उस समय का सब से बड़ा पुरस्कार कैसर-ए-हिंद स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

कठिन परिश्रम और लंबी-लंबी यात्राओं ने उनके स्वास्थ्य पर अपना स्थायी प्रभाव छोडा और जब वे किलिमानूर लौटे तो काफ़ी बीमार थे। 9 दिसंबर 1906 को उनकी मृत्यु हो गयी।

लेखक–रमेश संझगिरी

दीपिका

किशोर वय	= 11 से 15 तक की उम्र
दीवानखाना	= बैठक, a drawing room
मलिका	= महारानी
मलिक(पु)	मलिका (स्त्री)
खास तौर से	= विशेषत:
फुफेरी बहिन	= फूफी की बेटी
बुआ, फूफी	= पिता की बहिन
सरीखा	= समान
लोकप्रिय	= जो बहुत से लोगों को प्रिय लग
प्रवृत्ति	= Instinct, सहज आकर्षण
अवलोकन शक्ति	= निरीक्षण शक्ति
चौखट	= Door frame, കട്ടിള
तैल रंग	= तैल चित्र, Oil painting
विधि	= कार्य करने का ढंग, Method, manner
अवधारणा	= बोध, Sense, Perception
सौन्दर्य की अवधारण	= Sense of beauty
मोड़	= a turn

चित्रकारी	=	चित्रकार का काम, चित्रकला
स्वर्ण पदक	=	Gold medal
गुर	=	Formula, Secret, रहस्य
कार्य क्षेत्र	=	Field of activity
रजवाड़ा	=	राजकुटुंब
प्रदर्शनी	=	Exhibition
गायकवाड़	=	बड़ौदा नरेश की उपाधि
वस्त्रविन्यास	=	Mode of dress, വസ്ത്രധാരണരീതി
घुलना-मिलना	=	खूब मिलकर रहना
लीथोग्राफ़ी	=	चित्र छापने की एक शैली
लीथोग्राफ़र	=	लीथोग्राफ़ी का काम करनेवाला
मान्यता	=	Recognition, स्वीकृति, आदर

वाक्य रचना

साफ़ इनकार करना = to refuse bluntly

हड़ताल करने वाले मज़दूरों ने सरकार का अनुरोध नहीं माना और काम पर जाने से साफ़ इनकार कर दिया।

भूरिभूरि प्रशंसा करना = to praise in high terms

एवरेस्ट पर चढ़ने का सामाचार पाकर सारे संसार ने तेनसिंग की भूरि भूरि प्रशंसा की।

भेंट करना = to give as presents

तीनमूर्ति भवन में अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ रखी हुई हैं जो नेहरूजी को विदेशी राष्ट्रों द्वारा भेंट की गई थीं।

दंग रह जाना = आश्चर्यचकित होना।

उस छोटी सी बालिका का भाषण इतना उज्ज्वल था कि उसे सुनकर सब लोग दंग रह गये।

प्रश्न

1. जवाब दो:–

(1) लेखक को राजा रविवर्मा की कृतियों से प्रथम परिचय कब और कैसे हुआ ?

(2) लेखक ने राजा रविवर्मा की लोकप्रियता की तुलना लता मंगेशकर की लोकप्रियता से की है। क्यों ? स्पष्ट करो।

(3) बालक रविवर्मा में कौन-सा विशेष गुण देखने में आता था?

(4) राजा रविवर्मा के धार्मिक और पौराणिक चित्रों की नींव कहाँ रखी गयी थी?

(5) चित्ररचना में रविवर्मा को किन से प्रोत्साहन मिला? कैसे?

(6) "यह उनके जीवन का सबसे अधिक रोमांचकारी समय था।" कौन-सा समय और क्यों ?

(7) "उन की उम्र तब पच्चीस वर्ष की थी" कब ? उस समय कौन-सी विशेष घटना हुई ?

(8) प्रिंस आफ़ वेल्स क्यों दंग रह गये ?

(9) बंबई तथा देश के अन्य भागों में राजा रविवर्मा के कार्य-क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय देते हुए एक खंड लिखो।

(10) देश-विदेश में राजा रविवर्मा कैसे सम्मानित हुए ?

II. रेखांकित शब्द के बदले कोष्ठक के शब्द का प्रयोग करो:–

(1) हमारे दीवानखाने में दो तस्वीरों लगी थीं–एक सरस्वती की और दूसरी लक्ष्मी की थी। (चित्र)

(2) राजा रविवर्मा को स्वर्ण पदक मिला। (जीत लिया)

(3) यहाँ से राजा रविवर्मा बंबई चले गये थे और उनका कार्य-क्षेत्र विस्तृत हो गया था। (चित्रकार एकवचन)

(4) 9 दिसंबर 1906 को राजा साहब की मृत्यु हो गई। (मर)

(5) मैं सोचता था महारानी हमारी रिश्तेदार थीं। (हम)

III. लिंग निर्णय करो:–

नींव, परिचय, तस्वीर, शिक्षा, अध्ययन, मोड़, उम्र, इनकार, यश, मृत्यु।

IV वाक्यों में प्रयोग करो:–

खास तौर से, दंग रह जाना, दिन दूना रात चौगुना, नया मोड़ लेना, भेंट करना।

व्याकरण–अभ्यास

इन वाक्यों की तुलना करो :–

तुमने प्रधानमंत्री को देखा। (भूत निश्चय)

तुम ने प्रधानमंत्री को देखा होगा। (भूत अनिश्चय, विश्वास)

दोनों वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद करो। अनिश्चय और विश्वास को प्रकट करने के लिये नीचे के वाक्यों में (होगा, होगी, होंगे, होंगी) जोड़ लो।

(1) पिताजी आये।
(2) गाड़ी चली गई।
(3) हेडमास्टर ने मुझे बुलाया।
(4) अध्यापक ने मुझे छुट्टी दी।
(5) लड़कियाँ नाचीं।
(6) येशुदास ने सुन्दर गीत गाया।
(7) मद्रास में खूब वर्षा हुई।
(8) अशोक ने सन्यास ले लिया।
(9) अशोक ने स्तंभों का निर्माण किया।

दोनों प्रकार के वाक्यों का मलयालम में अनुवाद करो।

पाठ 13

शिवाजी का सच्चा स्वरूप

नाटक के पात्र :–

शिवाजी	––प्रसिद्ध मराठा वीर
मोरोपन्त पिंगले	––पेशवा
आवाजी सोनदेव	––शिवाजी का एक सेनापति
स्थान	––राजगढ़ का दुर्ग
समय	––सन् 1647 ई. संध्या

(शिवाजी वीरासन में किसी विचार में मग्न हैं। उनके स्वरूप और वेश-भूषा के संबंध में कुछ भी लिखना, इसलिए निरर्थक है कि एक भी भारतीय ऐसा नहीं जो उस से परिचित न हों। बाईं ओर से मोरोपंत पिंगले का प्रवेश। मोरोपंत अधेड़ अवस्था

का, गेहुँए वर्ण का, ऊँचा-पूरा व्यक्ति है। वेश-भूषा शिवाजी से मिलती जुलती है, केवल सिर की पगड़ी में अन्तर है। मोरोपंत की पगड़ी मराठी तरज़ की है।

मोरोपंत: (अभिवादन कर) श्रीमन्त सरकार, सेनापति आवाजी सोनदेव कल्याण प्रान्त को जीत, वहाँ का सारा खजाना लूटकर आ गये हैं।

शिवाजी : (चौंककर) अच्छा ! (मोरोपंत की ओर देखकर) बैठो, पेशवा, बड़ा शुभ संवाद लाये। आवाजी सोनदेव है कहाँ ?

मोरोपंत : (वीरासन पर बैठकर) श्रीमन्त की सेवा में अभी उपस्थित हो रहे हैं।

(कुछ देर निस्तब्धता। शिवाजी और मोरोपंत दोनों उत्सुकता से बाईं ओर देखते हैं। कुछ ही देर में आवाजी सोनदेव बाईं ओर से आता हुआ दिखाई देता है। आवाजी सोनदेव भी अधेड़ अवस्था का ऊँचा-पूरा मनुष्य है। वेश-भूषा मोरोपंत के सदृश है।)

शिवाजी : (मुस्कुराते हुए) कल्याण का खजाना भी लूट लाये, बहुत माल मिला ?

आवाजी सोनदेव : हाँ श्रीमन्त, सारा खजाना लूट लिया गया और इतना माल मिला जितना अब तक किसी लूट में भी न मिला था। चाँदी, सोना, जवाहरात, न जाने क्या क्या मिला। मैं तो समझता हूँ, श्रीमन्त, केवल दक्षिण की ही नहीं, उत्तर की भी विजय इस संपदा से हो सकेगी।

शिवाजी : और उस मेणा में क्या है ?

आवाजी सोनदेव : (मुस्कुराते हुए) उस मेणा.....उस मेणा में, श्रीमन्त, इस विजय का सबसे बड़ा तोफ़ा है।

शिवाजी : (उत्सुकता से आबाजी सोनदेव की ओर देखते हुए) अर्थात् ?

आवाजी सोनदेव : श्रीमन्त, कल्याण के सूबेदार अहमद की पुत्र-वधू के सौन्दर्य का वृत्त कौन नहीं जानता ? उसे भी श्रीमन्त की सेवा के लिए बन्दी कर के लाया हूँ।

(शिवाजी की सारी प्रसन्नता एकाएक जाती है। उनकी भृकुटि चढ़ती है और नीचे का ओंठ ऊपर के दाँतों के नीचे आ जाता है। आवाजी सोनदेव शिवाजी की परिवर्तित मुद्रा देखकर घबड़ा-सा जाता है। मोरोपंत एकटक शिवाजी की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।)

शिवाजी : (भर्राये हुए स्वर में) मेणा को अभी इधर लाओ।

(आवाजी सोनदेव जल्दी से बाहर जाता है। शिवाजी एकटक पालकी की ओर देखते हैं, मोरोपंत शिवाजी की तरफ़। कुछ ही क्षणों में पालकी आती है। ज्यों ही पालकी रखी जाती है, त्यों ही शिवाजी जल्दी से पालकी के निकट पहुँचते हैं। मोरोपंत शिवाजी के पीछे-पीछे जाता है।)

शिवाजी : (आवाजी सोनदेव से) खोल दो मेणा, आवाजी।

(आवाजी सोनदेव पालकी के दरवाज़े खोलता है। दरवाजे खुलते ही अहमद की पुत्रवधू उस में से निकल चुपचाप एक ओर सिकुड़कर खड़ी हो जाती है। वह परम सुन्दरी युवती है। वेश-भूषा मुगल स्त्रियों के सदृश।)

शिवाजी : (अहमद की पुत्र-वधू से) माँ, शिवा अपने सिपहसालार की इस नामाकूल हरकत पर मुआफ़ी चाहता है। आह! कैसी अजीबोगरीब खूबसूरती है आप की! आप को देखकर मेरे दिल में सिर्फ़ एक बात उठ रही है। कहीं मेरी माँ आपकी सी खूबसूरत होती तो मैं भी बदसूरत न होकर एक खूबसूरत शख्स होता। माँ, आप की खूबसूरती को मैं एक....सिर्फ़ एक काम में ला सकता हूँ; —उसका हिन्दू विधि से पूजन करूँ, उसकी इस्लामी तरीके से इबादत करूँ। आप ज़रा भी परेशान न हों। माँ, आप को आराम, इज्ज़त, हिफ़ाजत और खबरदारी के साथ आप के शौहर के पास पहुँचा दिया जायगा, बिना देरी के, फ़ौरन। (अवाजी सोनदेव की ओर घूमकर) आवाजी, तुम ने ऐसा काम किया है, जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। शिवा को जानते हुए, तुम्हारा साहस ऐसा घृणित कार्य करने के लिये कैसे हुआ? शिवा ने आज पर्यन्त किसी मस्जिद की दीवाल में बाल बराबर दरार भी न आने दी। शिवा को यदि कहीं कुरान की पुस्तक मिली तो उसने उसे सिर पर चढ़ा, उसके पन्ने को भी किसी प्रकार की क्षति पहुँचाये बिना, मौलवी साहब की सेवा में भेज दिया। हिन्दू होते हुए भी शिवा के लिए इस्लाम धर्म पूज्य है। इस्लाम के पवित्र स्थान, उसके पवित्र ग्रन्थ, सम्मान की वस्तुएँ हैं। शिवा हिन्दू और मुसलमान प्रजा में कोई भेद नहीं समझता। उसकी सेना में मुसलिम सैनिक तक हैं। वह देश में हिन्दूराज्य नहीं, सच्चे स्वराज्य की स्थापना चाहता है। आततायियों से सत्ता का अपहरण कर उदार-चेताओं के हाथों में अधिकार देना चाहता है।

फिर पर-स्त्री तो हरेक केलिये माता के समान है। जो अधिकार-प्राप्त जन हैं जो सरदार है, या राजा, उन्हें....उन्हें तो इस संबंध में विवेक,सबसे अधिक विवेक रखना आवश्यक है। (कुछ रुक कर) आवाजी, क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे ? इसलिये तो तुम ने यह कृति नहीं की ? शिवा ये लड़ाई- झगड़े, ये लूट-पाट क्या व्यक्तिगत सुखों के लिए कर रहा है ? क्या स्वयं चैन उड़ाना उसका उद्देश्य हैं ? तब....तब तो ये रक्तपात, ये लूटमार, घृणित अत्यन्त घृणित कृतियाँ हैं ? शिवा में यदि शील नहीं तो उस के सेनापतियों, सरदारों को शील का स्पर्श तक नहीं हो सकता। फिर तो हम में और इन्द्रिय-लोलुप लुटेरों तथा डाकुओं में कोई अन्तर भी नहीं रह जाता। अरे तब तो हमारे जीवन से हमारी मृत्यु, हमारी विजय से हमारी पराजय, कहीं श्रेयस्कर है। (मोरोपंत से) आह! पेशवा, यह.....यह.....मेरे.....मेरे.....एक सेनापति ने .....मेरे एक सेनापति ने.....क्या.....क्या कर डाला ? लज्जा से मेरा सिर आज पृथ्वी में नहीं, पाताल में घुसा जाता है! इस पाप का न जाने मुझे कैसा.....कैसा प्रायश्चित करना पड़ेगा ! (कुछ रुक कर) पेशवा, इस समय तो मैं केवल एक घोषणा करता हूँ;—भविष्य में और कोई ऐसा कार्य करे तो उसका सिर उसी समय धड़ से जुदा कर दिया जायगा।

(शिवाजी का सिर नीचे झुक जाता है। अहमद की पुत्रवधू कनखियों से शिवाजी की ओर देखती है। उसकी आँखों में आँसू छलछला आते हैं। मोरोपंत शिवाजी की ओर देखता है और आवाजी सोनदेव घबड़ाहट-भरी दृष्टि से मोरोपंत की ओर।)

दीपिका

वीरासन = बैठने का एक आसन या ढंग
अधेड़ = बुढ़ापे और यौवन के बीच का
अवस्था = उम्र
गेहुँआ वर्ण = गेहूँ का जैसा रंग
पगड़ी = Turban
सदृश = समान
मराठी तरज़ की = Marthi fashion
श्रीमन्त = श्रीमान
खजाना = Treasury
लूटना = To loot
पेशवा (उच्चारण-पेशवा) = महाराष्ट्र सम्राट का प्रधानमंत्री
संवाद (पु) = समाचार (पु), खबर (स्त्री)
उपस्थित हो रहे हैं = हाज़िर हो रहे हैं
निस्तब्धता = चुप्पी
बधाई = अनुमोदन, शुभकामना
जवाहरात = रत्न
न जाने = मालूम नहीं
संपदा = संपत्ति, धन
मेणा = पालकी
तोफ़ा = उपहार (पु), भेंट
पुत्र-वधू = पुत्र की पत्नी
वृत्त = कथा, बात
लाया = ले आया (अकर्मक)
मैं तोफ़ा लाया हूँ = मैं तोफ़ा ले आया हूँ

एकाएक = सहसा

भृकुटि चढ़ जाती है = भौंहें कुटिल हो जाती हैं (कोप की सूचना)

मुद्रा = मुखमुद्रा, चेहरे का भाव

भर्राना = भर भर का शब्द होना

सिकुड़ना = संकुचित होना

सिपहसालार = सेनापति

नामाकूल = अनुचित

हरकत = बदमाशी, बुरा काम

मुआफ़ी = माफ़ी, क्षमा, Excuse

अजीबोगरीब = बहुत विचित्र

खूबसूरती (स्त्री) = सौन्दर्य (पु)

खूबसूरत × बद्सूरत

दिल = हृदय, मन

मेरी माँ आप की जैसी खूबसूरत नहीं थी। इसलिए मैं एक खूबसूरत व्यक्ति नहीं हूँ।

शख्स = पुरुष, व्यक्ति

तरीका (पु) = रीति (स्त्री)

इबादत = आराधना, पूजा

ज़रा भी = कुछ भी

इज्जत = सम्मान, आदर

हिफ़ाजत = रक्षा, देख-रेख

खबरदारी = होशियारी, सतर्कता

शौहर = पति

फ़ौरन = तुरन्त, जल्दी
बिना देरी के = शीघ्र ही
कदाचित = कभी
घृणित = घृणा करने योग्य
आज पर्यन्त = आज तक
मसजिद (स्त्री) = Mosque
दीवाल (स्त्री) = दीवार (स्त्री)
बाल बराबर = बाल के समान
दरार (स्त्री) = छिद्र, फूट
पन्ना = Leaf, Sheet
क्षति = नाश
पूज्य = पूजनीय
हिन्दू होते हुए भी = हिन्दू है, फिर भी
आततायी = अत्याचारी, घोर पापी
सत्ता = अधिकार
उदार-चेता = जिनका चेत (मन) उदार है
अधिकार प्राप्त जन = वे जन जिनको अधिकार मिले हैं।
कृति (स्त्री) = कार्य (पु)
लूट-पाट, लूट-मार = लोगों को लूटना पीटना
शील = अच्छा स्वभाव
चैन उड़ाना = सुख प्राप्त करना
इन्द्रिय लोलुप = इन्द्रिय-सुख चाहनेवाला
लुटेरा = लूटनेवाला
घोषणा = Declaration, Announcement

अंतर	=	भेद
कहीं श्रेयस्कर है	=	बहुत ज्यादा श्रेयस्कर है
धड़	=	शरीर का मध्यभाग
जुदा	=	अलग
कनखी	=	कटाक्ष
यवनिका	=	Curtain

प्रश्न

I. जवाब दो:–

(1) आवाजी कल्याण विजय के बाद क्या तोफ़ा लाया ?

(2) तोफ़ा देखकर शिवाजी खुश नहीं हुए ? क्यों ?

(3) शिवाजी ने अहमद की पुत्र-वधू के प्रति कैसा आचरण किया ?

(4) हिन्दू-मुसलमान के भेद के बारे में शिवाजी का भाव कैसा था ?

(5) स्त्री के प्रति शिवाजी कौनसा मनोभाव रखते थे ?

(6) शिवाजी ने भविष्य केलिए कौन-सा आदेश दिया ?

II. सप्रसंग अर्थ समझाओ:–

(1) माँ, शिवा अपने सिपहसालार की इस नामाकूल हरकत पर मुआफ़ी चाहता है।

(2) उसका हिन्दू विधि से पूजन करूँ—इस्लामी तरीके से इबादत करूँ।

(3) आप को आराम, इज्ज़त, हिफ़ाज़त खबरदारी के साथ आप के शौहर के पास पहुँचा दिया जायेगा।

(4) शिवा ने आज पर्यन्त किसी मसजिद की दिवाल में बाल बराबर दरार भी न आने दी।

(5) परस्त्री-अरे ! परस्त्री तो हरेक केलिए माता के समान है।

(6) तब...तब तो ये रक्तपात ये लूटमार, घृणित अत्यन्त घृणित कृतियाँ हैं।

(7) तब...तब तो हमारे जीवन से हमारी मृत्यु कहीं श्रेयस्कर है।

(8) अगर कोई ऐसा कार्य करेगा तो उसका सिर उसी समय धड़ से जुदा कर दिया जाएगा।

III. बहुवचन लिखो:–

मसजिद, दीवार, दरार, तोफ़ा, तरीका, घोषणा।

IV. समानार्थक एक शब्द लिखो:–

(1) जो दूसरों का धन लूटता है।

(2) मारपीट, लूट, अत्याचार, स्त्रियों का अपमान आदि करनेवाले।

(3) आँखों के ऊपर की हड्डी पर धनुषाकार रोमावली।

(4) जनता की ओर से अपनी भलाई के लिए बनायी हुई शासन व्यवस्था।

व्याकरण-अभ्यास

I. हेतुहेतुमद् भूतकाल

हेतु = कारण		हेतुमत् = फल	
अगर यदि	मेरे एक भाई होता	तो	मुझे बड़ा सुख मिलता।
	आप मेरे साथ चलते		वह काम हो जाता।
	मेरे पास पैसे होते		मैं आप को देता।
	आप मुझसे माँगते		मैं पैसे देता।
	वह दवा लेता		उसकी तबीयत ठीक होती।

यहाँ हर-एक वाक्य में दो विचार हैं, जिनको 'अगर.....तो' से मिलाते हैं।

मेरे एक भी भाई नहीं है, इसलिए मुझे सुख नहीं मिलता है।
उक्त वाक्य में इस वास्तविकता के विरुद्ध कल्पना की जाती है।

II. अन्य वाक्यों में प्रकट वास्तविकता नीचे की तालिका में देखो।

कारण		फल
मेरे एक भी भाई नहीं है।	इसलिये	मुझे सुख नहीं मिलता है।
आप मेरे साथ नहीं चले।		वह काम नहीं हुआ।
मेरे पास पैसे नहीं थे।		मैंने आप को नहीं दिये।
आप ने मुझ से पैसे नहीं माँगे।		मैं ने आप को पैसे नहीं दिये।
उसने दवा नहीं ली।		उसकी तबीयत ठीक नहीं हुई।

III. निम्नलिखित वाक्यों में सूचित वास्तविक परिस्थिति क्या है ?

(1) अगर आप कार से आते तो कल ही यहाँ पहुँच जाते।

(2) अगर मैं लिखता तो वे ज़रूर आते।

(3) अगर वे अपने नौकर को भेजते तो मैं फल भेज देता।

(4) हम उस समय हाज़िर होते तो यह हाल न होता।

(5) हम अपने देश का माल खरीदते तो देश इतना गरीब न होता।

(6) अगर मैं पैसा होता तो सब के जेब में रहता।

IV. निम्नलिखित वाक्यों में जो वास्तविकता है उस के विरुद्ध कल्पना करो:–

(1) ठीक समय पर गाड़ी नहीं आई, इसलिए हमारे आने में देर हुई।

अगर.....तो.....।

(2) डाक्टर ने अच्छी चिकित्सा की, इसलिए पिताजी बच गये ।

अगर.....तो.....।

(3) जवानों ने डट कर धैर्य से काम किया, इसलिए हम को विजय मिली।

अगर.....तो.....।

(4) आप जानती नहीं थीं, इसलिए आप ने मुझे नहीं बुलाया।

अगर.....तो.....।

(5) इस मकान के निर्माण में काफ़ी सिमेंट का इस्तेमाल नहीं हुआ। इसलिए यह गिर गया।

अगर.....तो .....।

पाठ 14

यशोधरा

(गौतम अपनी पत्नी यशोधरा, पुत्र राहुल और सारा राज-सुख छोड़कर तपस्या करने के लिए चले गये। वे अपनी पत्नी से कहकर नहीं गये थे। सिद्धि प्राप्त करके भगवान बुद्ध एक दिन कपिलवस्तु पधारे। इस समाचार से वहाँ हलचल मच गई। परन्तु मानिनी यशोधरा अपने राजप्रासाद से नहीं निकली। उसके हृदय में मान है और उस मान में अनुराग भी है। संघर्ष चलता था अनुराग और मान के बीच। आज यशोधरा के जीवन की सब से कठिन परीक्षा का दिन आया है। वह अपने मन से प्रार्थना करती है।)

रे मन, आज परीक्षा तेरी।
बिनती करती हूँ मैं तुझ से,
बात न बिगड़े मेरी।

अब तक जो तेरा निग्रह था,
बस अभाव के कारण वह था।
लोभ न था, जब लाभ न यह था,

सुन अब स्वागत-भेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

दो पग आगे ही वह धन है,
अवलंबित जिस पर जीवन है।
पर क्या पथ पाता यह जन है ?

मैं हूँ और अँधेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

यदि वे चल आये हैं इतना,
तो दो पग उनको है कितना ?
क्या भारी वह, मुझ को जितना ?

पीठ उन्होंने फेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

सब अपना सौभाग्य मनाएँ
दरस-परस निःश्रेयस पाएँ।
उद्धारक चाहें तो आएँ,

यहीं रहे यह चेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

कवि–मैथिलीशरण गुप्त

दीपिका

बिनती	=	प्रार्थना
बिगड़ना	=	बुरी हालत होना
निग्रह	=	दमन, रोक
स्वागत-भेरी	=	स्वागत में बजनेवाली भेरी की आवाज़
पग	=	कदम
अवलंबित	=	आश्रित
अँधेरी	=	अंधकार (निराशारूपी अंधकार)

पीठ फेरना = छोड़कर चला जाना
दरस परस = दर्शन और स्पर्श (चरण स्पर्श)
निःश्रेयस = मुक्ति
उद्धारक = उद्धार करनेवाला
चेरी = दासी, सेविका

व्याख्या

बात न बिगड़े––

यशोधरा के हृदय में बुद्ध का स्वागत करने की इच्छा उमड़ रही है। वह मान पर टिकी है। वह संयम से रहती थी। न जाने इस संयम का बाँध कब टूट जाय। इसलिए अपने मन से प्रार्थना करती है कि वह संयम की सीमा का उल्लंघन न करे; आज उस के जीवन की अत्यन्त कठिन परीक्षा है।

अभाव के कारण वह था––

अब तक अपने प्रियतम का ठीक ठीक पता नहीं था, इसलिए उनको पाने का लोभ न था––और मानसिक संयम रहा।

वह धन = गौतम, प्रियतम

पर क्या पथ पाता यह जन है ?

निराशा रूपी अंधकार होने के कारण यशोधरा को बुद्ध के पास तक पहुँचने का मार्ग नहीं मिल रहा है।

क्या भारी वह, मुझ को जितना––

बुद्ध के लिए यह दूरी बहुत नहीं है, परन्तु मेरे लिए यह बहुत दूर है। बुद्ध मुझे छोड़कर चले गये थे।

दरस-परस निःश्रेयस पाएँ––

सभी लोगों को दर्शन, चरणस्पर्श और मोक्ष का सौभाग्य मिले।

उद्धारक चाहें तो आएँ––

यदि वे चाहें तो मेरे पास आकर मेरा उद्धार करें।

प्रश्न

जवाब दो:–

(1) यशोधरा अपने मन से क्या प्रार्थना करती है ?

(2) उसे कौन-सी बात बिगड़ जाने का डर है ?

(3) अब तक जो तेरा निग्रह था, बस अभाव के कारण वह था। यशोधरा अपने मन से क्यों ऐसा कहती है?

(4) यशोधरा क्यों आगे बढ़कर बुद्ध का स्वागत नहीं कर पाती?

(5) 'पीठ उन्होंने फेरी' इस उक्ति का भाव क्या है ?

(6) 'उद्धारक चाहें तो आएँ' इस उक्ति में यशोधरा के मन का कैसा भाव प्रकट होता है ?

(7) यशोधरा ने नारी के मान की रक्षा कैसे की ?

———

पाठ 15

अन्तिम आहुति

(वीरवनिता झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम किसने नहीं सुना है? 1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम में अंग्रेज़ों के साथ लड़ते-लड़ते उन्होंने भारत-माता के पैरों पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। यहाँ उनके अंतिम बलिदान का वर्णन है।

रानी बुरी तरह घायल हो गई थीं। रानी को तथा उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को घोड़े पर लिए उनके एक रिश्तेदार रामचन्द्र राव, दीवान रघुनाथ सिंह, सेनापति देशमुख और तोपचियों के सरदार गुलमुहम्मद बाबा गंगादास की एकाँत कुटिया के सामने पहुँचते हैं।)

रामचन्द्र राव ने अपनी वर्दी पर रानी को लिटाया और बचे हुए साफ़े के टुकड़े से उनके सिर के घाव को बाँधा।

रानी के मुँह से पीडित स्वर में धीरे से निकला, 'हर हर महादेव!' उनका चेहरा कष्ट के मारे बिलकुल पीला पड़ गया। अचेत हो गयीं।

बाबा गंगादास ने पश्चिम की ओर देखकर कहा, "अभी कुछ प्रकाश है। परन्तु अधिक विलंब नहीं। थोड़ी दूर घास की एक गंजी लगी हुई है। उसी पर चिता बनाओ।"

रानी के मुँह से बहुत टूटे स्वर में निकला, 'ओम् वासुदेवाय नमः'।

इसके उपरान्त उनके मुँह से जो कुछ निकला वह अस्पष्ट था, होंठ हिल रहे थे। ये लोग कान लगाकर सुनने लगे। उनकी समझ में केवल टूटे हुए शब्द आये।

'नै..नं..द..ह.. ति पावकः'। मुखमंडल प्रदीप्त हो गया।

सूर्यास्त हुआ। प्रकाश का अरुण-पुंज दिशा के भाल पर था। उसकी अगणित रेखाएं गगन में फैली हुई थीं।

देशमुख ने बिलख कर कहा, 'झाँसी का सूर्यास्त हो गया।'

बाबा गंगादास ने कहा, 'प्रकाश अनन्त है। वह कण-कण को भासमान कर रहा है। फिर उदय होगा। फिर प्रत्येक कण मुखरित हो उठेगा।'

बाबा गंगादास ने सूचित किया, 'झाँसी की रानी के सिधार जाने को अस्त होना कहते हो। यह तुम्हारा मोह है। वह अस्त नहीं हुई। वह तो अमर हो गयीं। कायरता का त्याग करो।

उस घास की गंजी पर दाह-संस्कार करो। अंग्रेज आते होंगे। शीघ्रता करो।'

वे दोनों सँभले।

देशमुख ने कहा, 'घास की गंजी बड़ी है?'

बाबा गंगादास ने उत्तर दिया, 'गंजी तो छोटीसी है।'

देशमुख कष्टपूर्ण स्वर में बोला, 'झाँसी की रानी के दाह के लिए आज लकड़ी भी सुलभ नहीं।'

बाबाने सिर उठाकर अपनी कुटिया को देखा।

बोले, 'इस कुटिया में काफ़ी लकड़ी है। उधेड़ डालो। अन्त्येष्टि क्रिया आरंभ करो।'

रघुनाथसिंह ने प्रार्थना की, 'आपकी कुटी की लकड़ी! आप एक कृपा करें तो।'

बाबा ने पूछा, 'क्या?'

रघुनाथसिंह ने उत्तर दिया, 'फिर से कुटी बनाने में आपको असुविधा होगी, इसलिए कुछ भेंट ग्रहण कर ली जाए।'

बाबा मुस्कुराये।

बोले 'यह लकड़ी मेरी नहीं है। जिन्होंने पहले दी थी वे फिर दे देंगे। देर मत करो। कुटिया को उधेड़ो।'

देशमुख ने कहा, 'उस में का सामान बाहर निकाल लिया जाय।'

बाबा भीतर से एक कम्बल, तूम्बी, चटाई और लंगोटी उठा लाये।

बोले, 'बस और कुछ नहीं है। जल्दी करो।'

आधी घड़ी में चिता प्रज्वलित हो गयी।

उस कुटी की भूमि पर रक्त बह गया था। उसको देशमुख ने धो डाला।

परन्तु उन रक्त की बूँदों ने पृथ्वी पर जो इतिहास लिख दिया था, वह अमिट रहा।

* * * * *

कुछ दूरी पर रिसाले की टापों का शब्द सुनायी पड़ा। वह रिसाला अंग्रेज़ों का था।

देशमुख—'रानी साहब की तलाश में वैरी घूम रहे हैं।'

रघुनाथसिंह—'आप दामोदरराव को लेकर तुरन्त निकल जाइये।'

देशमुख—'आप दीवान साहब, क्या झाँसी की ओर जायेंगे?'

रघुनाथसिंह—झाँसी में अब मेरा क्या रखा है। मैं इन सवारों को मार कर मरूँगा। ये लोग चिता की ओर आयेंगे। इसे वे लेंगे। जाइये तुरन्त जाइये। रात को कहीं छिप जाना। विश्राम करना।

* * * * *

एक तरफ़ जाकर गुलमुहम्मद ने अपनी वर्दी जलती हुई चिता पर फेंककर खाक कर दी—केवल साफ़ा रखा। उसके एक टुकड़े की लंगोटी लगायी। बाकी ओढ़ने-बिछाने को रख लिया।

खूब हँसकर बोला, 'अब हम बिलकुल आज़ाद हो गये, भाई!'

रघुनाथसिंह ने दोनों बन्दूकें भर लीं। गोला-बारूद के झोले लटकाये। गुलमुहम्मद के पास गया। उसको देखकर विस्मित हुआ।

बोला, 'आप तो सचमुच फ़कीर हो गये। अच्छा सलाम कुँअर साई साहब। भूल-चूक गलती माफ़ कीजिए।'

'सलाम', गुलमुहम्मद ने कहा।

जिस ओर से टापों का शब्द आ रहा था, रघुनाथसिंह उसी दिशा में गया। पास जाकर एक आड़ ली। लेट गया। प्रतीति ली कि अंग्रेज़ों का रिसाला है और कुटी की ओर आ रहा है।

'धाँयें धाँयें' बन्दूक चलायी।

'धाँय धाँय' अंग्रेज़ी रिसाले का जवाब आया।

चिता सायँ-सायँ जलती रही।

गुलमुहम्मद चिता से कुछ दूर जाकर लेट गया। साफ़े के टुकड़े से अपने को ढका। बेहद थका हुआ था, सो गया। सबेरे जब आँख खुली तो देखा कि चिता के स्थान पर कुछ जली हड्डियाँ बाकी रह गयी हैं।

चिता के ठण्डी हो जाने पर गुलमुहम्मद ने उस स्थान पर एक चबूतरा बाँधा और कहीं से फूल लाकर उस पर चढ़ाये।

अंग्रेज़ सेना का एक दल रानी की ढूँढ़-खोज में वहाँ पर आया।

चबूतरा अभी सूखा न था। उस दल के अगुए का कुतुहल जागा। गुलमुहम्मद से उसने पूछा, 'यह किसका मजार है, साईं साहब?'

गुलमुहम्मद ने उत्तर दिया, 'हमारे पीर का, वो बहुत बड़ा वली था।'

लेखक—वृन्दावनलाल वर्मा

दीपिका

बिठलाना---'बैठ' का प्रेरणार्थक

बैठना---बिठाना---बिठलाना

वर्दी = Uniform

लिटाना---लेटना का सकर्मक

लेटना---लिटाना---लिटवाना

साफ़ा = पगड़ी

के मारे = से पीड़ित होकर

घाव(पु) = Wound

अचेत = अबोध, बोधरहित

विलंब(पु) = देर (स्त्री)

गंजी = കൂമ്പാരം, heap

नैनं दहति पावकः = इस आत्मा को आग नहीं जलाती।
(भगवद्गीता से) आत्मा अनश्वर है।

उपरांत = बाद

होंठ = ओष्ठ

प्रदीप्त = उज्ज्वल

अरुण = लाल

पुंज = समूह, यहाँ लाल रश्मियों का समूह

भाल = ललाट

अगणित = असंख्य

बिलखना = विलाप करना

चीत्कार = ज़ोर से रोना

भासमान = शोभायमान, चेतनायुक्त
मुखरित = शब्दायमान
सिधार जाना = मरना
मोह = अज्ञान
कायर(वि) = कायरता (भा. स.)
त्याग करो = छोड़ दो
संभलना = आश्वास होना, आश्वस्त होना
उधेड़ना = പൊളിക്കുക, to pull down
अन्त्येष्टि = अंतिम धार्मिक क्रिया
उसमें का सामान = सामान जो उस में है
तूँबी = सूखे कद्दू का खोखला करके बनाया हुआ बर्तन, ചുരയ്ക്കാക്കുടുക്ക
चटाई = പായ, Mat to sleep on
लँगोटी = Mini under-wear
रिसाला = घुड़सवारों की टोली
टाप = घोड़े के दौड़ने की आवाज़
तलाश = अन्वेषण, खोज, ढूँढ
वैरी = शत्रु, दुश्मन
ओढ़ना = पहनना
बिछाना = വിരിയ്ക്കുക, to spread
मुर्दा = मरा हुआ, मृत
जान = जीव, प्राण
अगुआ = नेता
मजार = पीर की कब्र

पीर	=	धर्मगुरु
वली	=	महात्मा
बन्दूक	=	തോക്ക്, Rifle
गोला-बारूद	=	Ammunition
झोला	=	Bag
धाँय-धाँय	=	बन्दूक की आवाज़ का अनुकरण
साँय-साँय	=	चिता जलने की आवाज़ का अनुकरण
बेहद	=	निस्सीम
वो	=	वह

प्रश्न

I. पाँच-छह वाक्यों के खंड में जवाब दो :–

(1) गंगादास एक सच्चा सन्यासी था। इसका प्रमाण क्या है ?

(2) झाँसी की रानी के अंतिम क्षणों का वर्णन करो।

(3) झाँसी की रानी की अन्त्येष्टि का वर्णन करो।

(4) गुलमुहम्मद ने रानी के प्रति अपना आदर कैसे दिखाया ?

II. प्रसंगसहित भावार्थ स्पष्ट करो :–

(1) झाँसी का सूर्यास्त हो गया।

(2) हमारे पीर का, वो बहुत बड़ा वली था।

(3) उन रक्त की बूँदों ने पृथ्वी पर जो इतिहास लिख दिया था, वह अमिट रहा।

(4) हम बिलकुल आज़ाद हो गये।

III. निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय करो:–

होंठ, मकान, सूर्यास्त, घास, आग, लकड़ी, कुटिया, पृथ्वी, रिसाला, कुटी, वर्दी, भूल।––इनके प्रत्ययरहित बहुवचन लिखो।

IV. वाक्य मिलाओ :–

(1) चिता जलती थी। गुलमुहम्मद ने उस में अपनी वर्दी फेंक दी।

(2) रघुनाथसिंह ने बन्दूक भर ली। वे अंग्रेज़ों से लड़ने गये।

(3) उस में सामान है। वह सामान बाहर निकाल लिया जाए।

V. वाक्यों में प्रयोग करो :–

सिर उठाना, उधेड़ लेना, अमिट, बिलकुल, फूल चढ़ाना।

———

पाठ 16

तुलसीदास

तुलसीदास को इस लोक से गये तीन सौ वर्षों से अधिक हो गए। पर अभी तक निश्चित रूप से यह निर्णय नहीं हो सका कि वे कौन थे? कहाँ के थे? कब उन्होंने जन्म लिया? कब वे परलोकवासी हुए? और उन्होंने कब और कितने ग्रन्थ रचे?

वे एक विद्वान थे, महाकवि थे, सम्मानित थे, पर उन में अभिमान नहीं था, कीर्ति की लोलुपता नहीं थी। उन्होंने अपने विषय में बहुत ही थोड़ा कहा है।

तुलसीदास के जन्मकाल का यद्यपि ठीक-ठीक पता नहीं चलता। पर वे किस समय में विद्यमान थे, यह अज्ञात नहीं है।

'रामचरितमानस' में उन्होंने उसकी रचना का यह समय दिया है– सं. 1631 यानी 1575 ई.।

तुलसीदास ब्राह्मण वंश के थे। तुलसीदास के जन्म लेते ही उनकी माता का देहान्त हो गया था। माता की मृत्यु के बाद ही, संभवतः थोड़े ही दिनों में, उनके पिता का भी देहान्त हो गया होगा। माता-पिता-विहीन, अनाथ तुलसीदास घर-घर घूमते और टुकड़े माँगकर खाते थे।

तुलसीदास का पहला नाम रामबोला था। सम्भव है, राम-राम बोलकर वे भीख माँगा करते थे, इससे लोगों ने उनका नाम 'रामबोला' या 'रामबोलवा' रख लिया होगा। यह भी पता नहीं चलता कि किसने और कब रामबोला का नाम तुलसीदास रख दिया।

तुलसीदास के विद्या-गुरु का नाम नरसिंह था। तुलसीदास ने वेद, शास्त्र, पुराण, काव्य, नाटक आदि संस्कृत-साहित्य के प्रायः सभी विषयों के प्रसिद्ध ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उन्होंने 'रामचरितमानस' के प्रारंभ में

"नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि"

यह प्रतिज्ञा एक अधिकारी ही की हैसियत से की थी।

गुरु के पास वे युवावस्था तक रहे। अनेक शास्त्रों के अध्ययन केलिए काफी समय आवश्यक भी है। उनके गुरु रामोपासक थे। गुरु जी प्रायः राम की कथा कहा करते थे। तुलसीदास ने बचपन में पहले-पहल गुरुमुख से राम-कथा सुनी थी, पर उस समय वे बिलकुल बच्चे थे, इस से वे उसे ठीक-ठीक समझ नहीं सके।

गुरु राम की कथा कहते ही रहते थे। तुलसीदास की आयु और अध्ययन के साथ उनकी बुद्धि का विकास भी होता रहा। गुरु के समीप रहकर कई बार राम-कथा सुनने से उन्हें कुछ-कुछ समझ पड़ने लगा। कम से कम उतना तो उन्होंने समझ ही लिया था जितना 'रामचरितमानस' में उन्होंने व्यक्त किया है।

विद्याध्ययन के पश्चात् तुलसीदास ने विवाह किया था। विवाह के उपरान्त वे गृहस्थी चलाने केलिये उद्योग-धन्धों में लगे।

गृहस्थ-जीवन में वे कब तक रहे? यह उनके ग्रन्थों से प्रकट नहीं होता। सं० 1631 ('रामचरितमानस' के रचना-काल) के बहुत पहले से विरक्त हो चुके थे। विरक्त होने का भी कोई मूल कारण उनके ग्रन्थों में नहीं है। घर छोड़ने के बाद वे कहाँ-कहाँ घूमते-फिरते और सत्संग करते रहे, इसका भी पता नहीं चलता। पर प्रयाग, चित्रकूट और काशी की यात्रा कर के वे अयोध्या में जा बैठे थे, जहाँ उन्होंने 'रामचरितमानस' का प्रारंभ किया था।

तुलसीदास जन्म से गोसाई नहीं थे। यह एक उपाधि थी, जो उन्हें किसी समय किसी से मिली थी।

तुलसीदास बीच-बीच में भ्रमण भी करते रहते थे। 'रामचरितमानस' को उन्होंने अयोध्या में प्रारंभ किया था, पर बालकाण्ड, अयोध्या-काण्ड और आरण्यकाण्ड लिखने के पश्चात् वे काशी चले गए और वहीं उन्होंने किष्किन्धाकाण्ड प्रारंभ किया। तीर्थराज प्रयाग के प्रति उनमें बड़ी श्रद्धा थी। वे प्रयाग भी आते-जाते रहते थे। चित्रकूट भी उनके प्रिय स्थानों में था। वहाँ भी वे बार-बार जाते रहते थे।

'रामचरितमानस' जैसे चमत्कारपूर्ण काव्य के रचयिता का सम्मानित होना स्वाभाविक ही है। तुलसीदास ने अपने सम्मान का अनुभव बार-बार किया है।

तुलसीदास के जीवन के अन्तिम कई वर्ष लगातार काशी में बीते और अन्त में उनका स्वर्गवास भी वहीं हुआ। राम के भक्त होकर वे राम की राजधानी छोड़कर काशी क्यों आये, इसका उत्तर ग्रन्थों से नहीं मिल सकता। वे काशी कब गये ? इसका कोई ठीक समय नहीं बताया जा सकता। पर यह निश्चित है कि वृद्धावस्था में अन्तिम बार काशी जाकर वे फिर कहीं नहीं गये और वहीं से परमधाम को पधार गए।

'रामचरितमानस' तुलसीदास की सब से सुन्दर रचना है। जिस तरह चन्द्रमा को हम जीवन भर देखते रहते हैं, पर वह कभी बासी नहीं होता, उसी प्रकार 'रामचरितमानस' कभी नीरस नहीं होता। उसमें हर एक बार कुछ न कुछ नवीनता ही मिलती रहती है। कहीं हम तुलसीदास में एक विद्वान और विवेकशील वक्ता की प्रगल्भता पाते हैं, तो कहीं एक शोख कवि का नटखटपन भी। कहीं हम उन्हें भक्ति की अगाध धारा में नहाते पाते हैं, तो कहीं देवताओं की खिल्ली उड़ाते हुए।

तुलसीदास राम के अनन्यय भक्त थे। जहाँ-कहीं उन्हें अवसर मिला है, राम का यश गाने में उन्होंने कोई बात उठा नहीं रखी।

'रामचरितमानस' में उन्होंने सेवा-धर्म को सदा प्रधानता दी है। उनके राम ब्रह्मा, विष्णु और शिव से भी परे थे। उनके राम का स्वरूप यह चराचर जगत् ही था। इसी की सेवा का उपदेश उन्होंने 'मानस' में सर्वत्र दिया है। राम को महान से

महान बनाकर वे उन्हें शबरी के घर में ले जाते हैं और उसके बेर खिलवाते हैं; गिद्ध के लिए उनसे पिता शब्द कहलवाते हैं; वानर-भालुओं को मधुर शब्दों से प्रोत्साहन दिलवाकर उन्हें राम के सहायक बनाते हैं; क्या यह उनका इशारा नहीं है कि इसी प्रकार से उच्च-नीच का भेद-भाव छोड़कर सब एक हो जायँ और सुसंगठित होकर सुराज या स्वराज्य का सुख भोगें ?

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

दीपिका

पता नहीं चलता	=	जानकारी नहीं है
अज्ञात नहीं है	=	ज्ञात है, मालूम है
1631	=	सोलह सौ इकतीस
1575	=	पन्द्रह सौ पचहत्तर
सं०	=	विक्रम संवत्
ई.	=	ईसवी सन्
देहांत (पु)	=	मृत्यु (स्त्री)
संभवतः	=	शायद
हैसियत	=	योग्यता, status
नाना, पुराण, निगम, आगम, सम्मतम्	=	जो अनेक पुराणों वेदों और शास्त्रों को सम्मत है।
रामायणे	=	रामायण में, (यहाँ वाल्मीकि रामायण में)
निगदितं	=	वर्णित
क्वचित् अन्यतः अपि	=	कुछ अन्य ग्रन्थों से भी
रामोपासक	=	राम की उपासना करनेवाले

गृहस्थी चलाना = परिवार की देखभाल करना
गोसाई = संन्यासी, यह एक जाति का नाम भी है
लगातार = निरन्तर
परमधान = स्वर्ग
बासी = जो ताज़ा न हो
नीरस = विरस
शोख = घृष्ट, नटखट
नटखटपन (भा. स.)
कोई बात उठा नहीं रखी = परिश्रम करते ही रहे
गिद्ध, गृद्ध = यहाँ जटायु

वाक्य रचना

I. अतीत काल-अवधि की सूचना :–

(1) राजा को मरे बहुत वर्ष हो गये।
(2) गाड़ी को छूट गये आधा घंटा हो गया है।
(3) आप को यहाँ बैठे कितना समय हुआ है ?
(4) हमको इस शहर में आये सात वर्ष हुए।

II. नित्यताबोधक क्रिया :–

(1) तुलसीदास जी भीख माँगकर खाया करते थे।
(2) हम रोज़ नदी में नहाया करते हैं।
(3) तुम लोग रोज़ सुबह कहाँ जाया करते हो ?
(4) पुराने ज़माने में भारत की स्त्रियाँ पति को 'आर्यपुत्र' कहा करती थीं।
(5) गुरु तुलसीदास को रामकथा सुनाया करते थे।

III. नित्यताबोधक क्रिया का प्रयोग कर के पूरा वाक्य लिखो :–

(क्रिया काल में अन्तर न हो)

(1) हम शाम को खेलते हैं।

(2) गाड़ी दस बजे आती थी।

(3) लड़कियाँ सबेरे प्रार्थना करेंगी।

(4) मैं सिनेमा देखता हूँ।

(5) तुम दिन में सोती हो ?

IV. क्रियाव्यापार में अनिश्चय के साथ विश्वास–(इन वाक्यों की तुलना करो)

(1) गाड़ी आयी है। (निश्चय)

(2) गाड़ी आई होगी। (अनिश्चय और विश्वास)

V. निम्नलिखित वाक्यों में 'होगा' रूपों का अर्थ समझो :–

(1) किसी ने तुलसीदास का नाम रामबोलो रखा होगा।

(2) लड़कों ने पाठ लिखा होगा।

(3) लड़कियों ने रोटी तैयार की होगी।

(4) बच्चे सो गये होंगे।

(5) गाड़ी ठीक समय रवाना हुई होगी।

(6) मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ हूँगा।

VI. नीचे के वाक्यों में अनिश्चय और विश्वास को प्रकट करने केलिए आवश्यक परिवर्तन करो :–

(1) हेडमास्टर दफ़्तर में बैठे हैं।

(2) नौकरानी आती है।

(3) माताजी चाय पीती हैं।

(4) मेरी बेटी को काम मिला है।

प्रश्न

I. निम्नलिखित विषयों पर पाँच-छह वाक्यों का एक-एक खण्ड लिखो :–

(1) तुलसीदास का बचपन।

(2) तुलसीदास का पालन-पोषण।

(3) तुलसीदास की शिक्षा।

(4) रामचरित मानस का सन्देश।

(5) रामचरितमानस की रचना—कब और कहाँ ?

(6) तुलसीदास के गुरु।

II. वाक्यों में प्रयोग करो :–

जन्म लेना, संभवतः, काफ़ी, बिलकुल, पता चलना।

III. रेखांकित शब्द के बदले कोष्ठक के शब्द का प्रयोग करो:–

(1) थोड़े ही दिनों में उनके पिता का देहांत हो गया होगा। (मृत्यु)

(2) उन्होंने रामायण की रचना का समय दिया है। (लेखन)

(3) विद्याध्ययन के पश्चात् तुलसीदास ने विवाह किया था। (शादी)

(4) हम सब भेदभाव भूलकर एक हो जाएँ। (तुम)

(5) वे प्रयाग आते जाते रहते थे। (मैं-पुरुष)

IV. कोष्ठक में दी हुई क्रिया के कर्मवाच्य रूप से पूरा करो :-

(1) बच्चे का नाम रामबोला—। (रख)

(2) रामायण की रचना अयोध्या में–। (शुरू कर)

(3) राजा रविवर्मा को पुरस्कार—। (दे)

(4) पश्चिम में भी राजा रविवर्मा के बनाये चित्रों की—। (प्रशंसा करना)

(5) तुलसीदास की तुलना एष्णुत्तच्छन से —सक–।(कर)

(6) तुलसीदास को गोसाई की उपाधि—। (प्रदान कर)

(7) पंजाब से भारत के सभी राज्यों को अनाज—।(भेज)

(8) केरल में गरीबों के लिए लाख घर—। (बनवा)

(9) इस दूकान में दवाएँ नहीं—। (बेच)

(10) पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद इस्तेमाल —। (कर)

———

पाठ 17

समर्पण

सूखी-सी अधखिली कली है
परिमल नहीं, पराग नहीं।
किन्तु कुटिल भौंरों के चुम्बन
का है इन पर दाग नहीं।।

तेरी अतुल कृपा का बदला
नहीं चुकाने आयी हूँ।
केवल पूजा में ये कलियाँ
भक्ति-भाव से लायी हूँ।।

प्रणय-जल्पना चिन्त्य-कल्पना
मधुर वासनाएँ प्यारी।
मृदु अभिलाषा, विजयी आशा
सजा रही थीं फुलवारी।।

किन्तु गर्व का झोंका आया
यदपि गर्व वह था तेरा।
उजड़ गयी फुलवारी सारी
बिगड़ गया सब कुछ मेरा।।

बची हुई स्मृति की ये कलियाँ
मैं समेट कर लायी हूँ।
तुझे सुझाने, तुझे रिझाने।
तुझे मनाने आयी हूँ।

प्रेम-भाव से हो अथवा हो
दया-भाव से ही स्वीकार।
ठुकराना मत, इसे जानकर
मेरा छोटा-सा उपकार॥

लेखिका—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

दीपिका

प्रेमिका एक उपहार लेकर प्रियतम के सामने आई है। यह उपहार क्या है? 'स्मृति की कलियाँ' ही उसका उपहार हैं। ये कलियाँ किस फुलवारी से समेटी हुई हैं? फुलवारी की मालिनें कौन कौन थीं? उस फुलवारी को क्या हो गया? इन कलियों की विशेषता क्या है?

अधखिली	=	आधी खिली हुई। जो पूर्ण रूप से विकसित नहीं
परिमल	=	सुगन्ध
पराग	=	पुष्परेणु
कुटिल	=	दुष्ट
इन पर	=	इन कलियों पर
दाग	=	लाँछन
अतुल	=	अतुल्य, असमान
बदला चुकाना	=	बदले में कुछ करना
प्रणय-जल्पना	=	प्रणय से प्रेरित नर्म-भाषण

चिन्त्य	=	चिन्दोद्दीपक
झोंका (पु)	=	तूफ़ान (पु) धक्का
समेट कर	=	संभालकर, एकत्र करके
सुझाना	=	सुझाव देना
रिझाना	=	आकृष्ट करना
मनाना	=	प्रसन्न करना
ठुकराना	=	तिरस्कार करना

प्रश्न

I. जवाब दो :–

(1) प्रेमिका प्रियतम से किन भावों की प्रतीक्षा करती है ?

(2) उसकी विनम्र प्रार्थना क्या है ?

(3) ये स्मृति की कलियाँ किसलिए लाई गई हैं ?

(4) 'उजड़ गई फुलवारी सारी'। कैसे ?

(5) फुलवारी की सजावट कैसे हुई थी ?

(6) कवयित्री किस भाव से प्रेरित हुई है ?

II. नीचे के आशयोंवाली पंक्तियाँ चुन लो :–

(1) गर्व के मारे बगीचा उजड़ गया, सब कुछ नष्ट हो गया।

(2) प्रियतम की कृपा का प्रतिफल देने के लिये नहीं, सिर्फ भक्ति से प्रेरित होकर कवयित्री उपहार लाई हैं।

III. भावार्थ स्पष्ट करो :–

(1) किन्तु कुटिल भौरों के चुम्बन
का है इन पर दाग नहीं।

(2) प्रणय-जल्पना, चिन्त्य-कल्पना
मधुर वासनाएँ प्यारी
मृदु अभिलाषा, विजयी आशा
सजा रही थीं फुलवारी।

जयहिन्द

PRINTED BY THE MANAGING DIRECTOR KERALA BOOKS AND PUBLICATIONS SOCIETY
AT THE TEXT BOOK PRESS, THRIKKAKARA, COCHIN-682 030